GENERAL STUDIES HINDI

www.gshindi.com

Presents

GEOPGRAPHY OPTIONAL PAPER I

Topic - Population Geography

(जनसंख्या भूगोल)

Other products :

The HINDU Analysis

LSTV Summary, AIR Debates

8800141518

facebook.com/gsforhindi

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

जनसंख्या का वितरण।

- मानव भूगोल के तहत जनसंख्या भूगोल मे हम निम्न प्रश्नो और गुत्थियो को समझने की कोशिश करते है।

I. प्रथ्वी पर लोग कहाँ और क्यों रहते हैं।

II. दूसरा प्रश्न जो हम उत्तर देने की कोशिश करते है इसमें हम जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक और किसी क्षेत्र विशेष मे लोगो के रहने के प्रभावित के लिए कौन से कारक जिम्मेदार हैं उसका उत्तर ढूंढने की कोशिश करते हैं।

III. जनसंख्या वृद्धि और वितरण की भविष्य मे क्या रहा होगी तथा इस पैटर्न के संभवत: का क्या प्रभाव देखने को मिलेगे जैसे - गरीबी, संसाधनो की माँग, टकराव व संघर्ष इत्यादि मानवीय कारणो को सम्बोधित करने की कोशिश करते हैं।

जनसंख्या वितरण

Anishome.

एकुमीन

2017 के मध्य तक 7.5 बिलियन की जनसंख्या है विश्व का.

→ 2017 के मध्य तक विश्व की जनसंख्या करीब 7.6 बिलियन के आस पास के है और यह 2050 तक करीब 9.9 बिलियन हो जायेगी। इस जनसंख्या का वितरण पुरे विश्व मे समरुप नही है। और एक अनुमान के मुताबिक विश्व की 90% जनसंख्या विश्व के केवल 10% भू-भाग पर ही निवास करती है और इनका प्रमुख संकेन्द्रण (con.) उष्णकटिबंधीय और शीतोष्ण कटिबंधीय इलाको मे है।

→ जनसंख्या वितरण को पहली बार अरिस्टोटल ने संबोधित किया और विश्व को दो भागो ecumene और non ecumene मे विभाजित किया। यह एक नियतवादी सिद्धांत है जिसमे

→ Determinism - नियतवादी

→ possiblism - संभववाद

प्राकृतिक और भौगोलिक पहलू जनसंख्या वितरण को नियंत्रीत करते है। परन्तु अभी

जनसंख्या वितरण = f (Physical, Nature)

के समय मे हम पृथ्वी को ecumene और non ecumene मे नही बल्कि prefreable और non prefreable (वरीयता और अवरीयता) भागो मे विभाजित करते है। इसके अनुसार मानव स्वयं निर्धारित करता है कि उसे किसी/किस भू-भाग पर अपना आवास बसाना।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक :

(factor determine distribution of population)

I. ऐतिहासिक/Historical - अप्रत्यक्षत: यह कारक कुछ हद तक भौगोलिक और प्राकृतिक कारको द्वारा निर्धारित होते है। इसके अनुसार कुछ क्षेत्र जहाँ जनसंख्या ज्यादा है वो इसलिए है कि उनके बसाव का इतिहास काफी लम्बा है।

जैसे - वॉगवोच (ह्वांग) सभ्यता, नील सभ्यता, गंगा नदी सभ्यता इत्यादी।

II. भौगोलिक और प्राकृतिक कारक - तापमान, आर्द्रता, वर्षा, प्रचलित पवने, परिवर्तता (Variability)

इत्यादी मानवीय क्रियाशीलता को नियंत्रीत करते है हटिंगटन के अनुसार मानसिक कार्य के लिए 3°-5° तथा शारिरीक श्रम के लिए 15°-20° तापमान सर्वोपरी अतः मानवीय घनत्व उच्चतम तापमान तथा निम्नतम तापमान मे काफी विरल होगा इसी मे अगर हम आस्ट्रेलिया के घनत्व की बात करे तो वहाँ का घनत्व प्रति व्यक्ति 1 वर्ग km है।

हटिंगटन अनुसार मानसिक, शारिरीक, लिए 15- तापमान:

II. भूविन्यास / स्थलाकृति (physiography) - स्थलाकृतियाँ भी मानव के वितरण को प्रभावित करती है और यह इन स्थानो पर होने वाले आर्थिक क्रियाकलापो जैसे - खेती, परिवहन, इत्यादि पर निर्भर करती है सबसे ज्यादा घनत्व मैदानी भागो, फिर पठारी भागो तथा पहाड़ो पर निम्न घनत्व पाया जाता है।

III. मिट्टी (soil) - मानव सभ्यता का इतिहास मिट्टी का इतिहास है इसको कहने मे कोई अतिशयोक्ति नही होगी क्योंकि जहाँ मिट्टी की उर्वरता / उपजाऊपन अधिक है वहाँ कृषि का विकास होगा और उससे मानवीय सम्पन्नता या संवृद्धि मे बढ़ावा होगा अगर हम विश्व का उदाहरण ले तो चीन का तटीय इलाके याँगतेज नदी (पीली नदी), ह्वांगो नदी, मिस्त्र मे नील नदी जहाँ पर जलोढ़ मिट्टी है वहाँ जनसंख्या वितरण अधिक है। अगर भारत का उदाहरण ले तो वो जनसंख्या घनत्व गंगा नदी तंत्र के किनारे तथा तटीय इलाको मे अधिक हैं। क्योंकि वहाँ अधिक उर्वरता वाली जलोढ़ मिट्टी है। पहाड़ी मिट्टी जो कश्मीर, हिमाचल उत्तराखण्ड, सिक्कीम, अरुणाचल प्रदेश इत्यादि

GENERAL STUDIES HINDI

में है वहाँ जनसंख्या घनत्व निम्न है। भारत का मध्यम भाग में पीली मिट्टी और लाल मिट्टी जिसकी उर्वरता मध्यम स्तर की है वहाँ घनत्व (जनसंख्या) भी मध्यम स्तर का है।

पहुँच

(iv). अभिगम्यता (Accessibility) – किसी भी स्थान की स्थिति तथा उसकी पहुँच, परिवहन की व्यवस्था तथा मार्केट तक उसकी पहुँच सुगम बनाती है और इसके कारण जनसंख्या का उस क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा संकेन्द्रण होने लगता है। उदाहरणार्थ विश्व के प्रमुख शहर जैसे - मुम्बई, चेन्नई, शंघाई इत्यादी तटीय इलाकों पर स्थित है जिससे इन शहरों से सामुद्रिक व्यापार आसानी से किया जा सकता है।

(v). मानवीय कारक –

⇒ आर्थिक क्रिया-जीवन की गुणवत्ता में सुधार तथा जीवन के लिए अपने विकल्पों के प्रसार के लिए भी मानव एक जगह से दूसरे जगह पलायन कर रहे है इसको हम शहरीकरण तथा विकासील देशों से विकसीत देशों की तरफ प्रवास की धारा से समझ सकते है। किसी क्षेत्र के सामाजिक वर्ग उसके रीति रिवाज, परम्पराये ; धार्मिक विश्वास इत्यादि जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण कारक है। इसको हम निम्न उदाहरणो से समझ सकते है।

1. परिवार नियोजन व धार्मिक अवधारणाएँ - कुछ धर्म विशेष के लोग परिवार नियोजन में होने वाले कार्यक्रमो और प्रक्रियाओ को धर्म के विरुद्ध समझते है और इस कारण इन परिवार

प्रश्न संख्या
(Question No.)

U.P.S.C.

भारत मे 20% जनसंख्या वृद्धि का कारण IMR है।

नियोजन कार्यक्रमो के प्रति नकारात्मक मानसिकता है। इसका उदाहरण हम मुस्लिम बहुल देशो जैसे - साउदी अरबिया, इंडोनेशिया से समझा जा सकता है जहॉ जन्म दर अधिक है।

ii. बहुविवाह

iii. सामाजिक मान्यताएँ - भौतिकतावादी पाश्चात्य संस्कृति आर्थिक सम्पन्नता के लिए पलायन को प्रोत्साहित करती है जबकि रुढ़िवादी मान्यताऐं तथा संतोष की प्रकृति पलायन को हतोत्साहित करती है।

iv. राजनीतिक - सरकारो के परिवार नियोजन कार्यक्रम तथा विकास से संबंधित योजनाएँ इत्यादि भी वितरण को प्रभावित करती है। उदाहरणतः चीन ने "one child policy" के तहत जनसंख्या पर लगाम लगाया है और इसी कारण world population report, 2017 के अनुसार चीन जनसंख्या मामले मे 2024 तक भारत से पीछे हो जायेगा।

विश्व की 2/3 जनसंख्या A रतटों के 500 km के पास रहता है।

विश्व मे हो रहे विवादो और युद्धो के वजह से लोगो का पलायन हो रहा है और इन political Refugee के वजह से सीरिया अधिकतम जनसंख्या (की) यूरोप की तरफ प्रवास कर चुकी है।

v. जलवायु परिवर्तन - विश्व मे जलवायु परिवर्तन के वजह से climatic refugee प्रवास करेगे और इससे भी वितरण प्रभावित होगा।

vi. जनांकिकी / जनसांख्यिकि / Demography - किसी भी देश के क्षेत्र या धर्म से, जाति से, वर्ग से कितने लोग नयी पीढी मे जन्म लेगे यह इनकी जनसांख्यिकि अवस्था पर निर्भर करता है। जो देश

12th.
India Land and pepple, मानवीय भूगोल की

U.P.S.C.

प्रश्न संख्या (Question No.)

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

60% वृद्धि का भारत में आधार के कारण है।

जनांकीकि संक्रमण की (demography Trasition) विस्फोटक अवस्था से गुजर रहे है वहाँ जनसंख्या। वृद्धि का विस्तार अधिक होगा।

जनसंख्या वितरण का स्वरूप
pattern of population distribution

→ जनसंख्या विश्व मे संकेन्द्रण को हम प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रो मे विभाजित कर सकते हैं। प्राथमिक क्षेत्रो मे जनसंख्या संकेन्द्रण बड़े भौगोलिक भूभाग पर होता है। मुख्यतः विश्व मे 5 (पाँच) ऐसे भूभागो का पता लगा सकते हैं।

I. पूर्वी एशिया - कोरिया, चीन, ताईवान और जापान मे विश्व की 25% निवास करती है और यह जनसंख्या मुख्यतः उन क्षेत्रो मे ज्यादा है जहाँ भौगोलिक और प्राकृतिक परिस्थितियाँ मानव के रहने के अनुकूल है। इस क्षेत्र मे सबसे ज्यादा जनसंख्या चीन है (मे) और world population report, 2017 के अनुसार चीन मे विश्व की 18.47% जनसंख्या निवास करती है। चीन मे इस जनसंख्या का वितरण असमान है और यह मुख्यतः तटीय इलाको और इसमे ~~इसमे~~ बसे हुए शहरो जैसे बिजिंग, शंघाई, मुकदान त्रिभुज मे अधिक है।

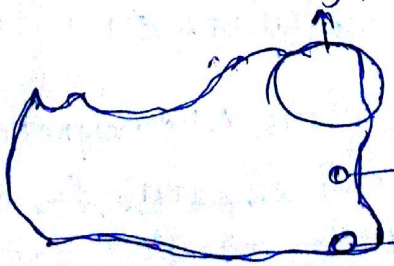

जबकि चीन का पश्चिमी

भाग काफी विरल है इन तटीय इकाको मे जनसंख्या घनत्व 1000 हजार व्यक्ति प्रति वर्ग Km है जबकि चीन का औसत घनत्व 147 प्रति वर्ग km है इन संमुद्र तटीय इकाको के अलावा जेचवान बेसिन, सीक्यांग बेसीन. यौगसिसीक्यांग बेसिन में है। चीन की 59% जनसंख्या शहरो मे निवास करती है। चीन मे इन जनसंख्या वितरण का प्रमुख कारण, निम्न दो कारणो के वजह से है।

जेचवान, सीक्यांग, यांगटिसीक्यांग बेसिन

I. चीनी सभ्यता का तथा जनसंख्या वृद्धि का लम्बा इतिहास

II. 18वी शताब्दी के बाद औद्योगिकरण का इससे स्वास्थ्य सेवाओ मे सकारात्मक प्रभाव

⇒ **जापान** – जापान की भौगोलिक स्थितियाँ मानव के रहने के लिए अनुकूल नही है फिर भी औद्योगिकरण तथा अन्य मानवीय कारको के वजह से जनसंख्या घनत्व अधिक है जापान मे विश्व की 1.68% जनसंख्या निवास करती है तथा 94.5% जनसंख्या शहरो मे निवास करती है जापानी जनसंख्या का मानव सूचकांक उच्च है तथा यह देश जनसांख्यिकी की चौथी अवस्था से गुजर रहा है जिसके वजह से जीवन प्रत्याशता अधिक है तथा जन्म दर बहुत ही कम इसके वजह से जापानी जनसंख्या का ह्रास होगा और world population report, 2065 के अनुसार इसकी जनसंख्या वर्तमान से 1/3 ही रह जायेगी।

IV. **दक्षिणी एशिया** – दक्षिणी एशिया मे W.P.R के अनुसार इन क्षेत्रो मे विश्व की 24.89% (1/4th) जनसंख्या निवास करती है। इन क्षेत्रो की जनसंख्या

मुख्यतः गाँवों में निवास करती है और जनसंख्या वृद्धि दर विकसित देशों के मुकाबले उच्च है मानवीय विकास सूचकांक में स्थिती अच्छी नही है तथा इन प्रदेशों की कुछ सामान्य समस्याएँ है जैसे - गरीबी, भुखमरी इत्यादि यह क्षेत्र मुख्यतः पुरुष प्रधान है तथा महिलाओं की स्थिती समाज में अच्छी नही है और उनका आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक स्तर निम्न है इन क्षेत्रो की जनसंख्या जनांकिकीय संक्रमण की विस्फोटक की अवस्था से गुजर रही है तथा लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या युवा लोगो की है। इन क्षेत्रो की प्रजनन दर 2.1 से 5 के आसपास है तथा अधिकांश जनसंख्या पूर्व से पश्चिम गलियारे के बीच बसी हुई है और इनके बसने का भौगोलिक कारक है।

(ii) दक्षिणी पूर्वी एशिया - विकास के मामले में दक्षिणी पूर्वी एशिया पूर्व एशिया के समकक्ष है परन्तु दक्षिणी एशिया और पूर्वी एशिया से कुछ आधारभूत भिन्नता है। दक्षिणी एशिया तथा पूर्वी एशिया जहाँ अनुकूलतम भौतिकी है वही दक्षिणी पूर्वी एशिया में ~~विषुवत~~ रेखीय प्रकार की जलवायु पायी जाती है इस क्षेत्र में जनसंख्या वितरण औपनिवेशवाद के लम्बे इतिहास के वजह से है जहाँ बागानी कृषि (plantation agri) के लिए अफ्रीका, दक्षिणी एशिया से लोगो को बसाया गया (Indentured labour) औपनिवेशवाद के खत्म होने के बाद इस क्षेत्र में पूर्वी

एशिया तथा दक्षिणी पूर्वी एशिया से प्रवासीयो को आकर्षित किया और औद्योगिक विकास के वजह से भी जनसंख्या मे वृद्धि हुई है।

(iv) **पश्चिमी यूरोप :** पश्चिमी यूरोप मे विश्व की 2.55 % जनसंख्या निवास करती है और 80.2 % जनसंख्या शहरो मे निवास करती है इन क्षेत्रो मे जनसंख्या विस्तार का कारण ~~इतिहास~~ विकास का लम्बा इतिहास और औद्योगिकरण की वजह से जीवन स्तर मे सुधार है।

→ इसके अलावा खाद्य पदार्थों की उपलब्धता (Availability), गुणवत्ता तथा उसकी अपवहन की क्षमता (Affordability) तथा स्वास्थ्य सेवाओ मे सुधार तथा उसके वजह से मृत्यु दर मे कमी इत्यादि के वजह से भी इन क्षेत्रो मे जनसंख्या वृद्धि हुई है वर्तमान मे ये क्षेत्र नकारात्मक वृद्धि देख रहे है तथा ~~वर्ष~~ W.P.R, 2015 के अनुसार यहाँ प्रजनन दर 1.3 से 2050 तक 1.8 होगी फिर भी जनसंख्या वृद्धि का ह्रास नही रुकेगा।

→ यूरोप मे जनसंख्या का मुख्य विस्तार ग्रेट ब्रिटेन से वोल्गा नदी तक है जिसे यूरोप की कोयला पेटी के नाम से भी जाना जाता है सर्वाधिक संघनता 50° उत्तरी अक्षांश के आस पास है जिसे यूरोपीयन जनसंख्या की धुरी भी कहते है (Pivot of European population)

(v) **उत्तरी पूर्वी अमेरिका :** इस क्षेत्र की जनसंख्या की बहुलता और संघनता का कारण औपनिवेशिक इतिहास है जिसके कारण जनसंख्या वितरण

न्यू इंग्लैण्ड और उसके आस पास के क्षेत्रों मे सर्वाधिक है इन क्षेत्रों का इतिहास लम्बा नही है परन्तु मात्र 300 साल पुराना है इन क्षेत्रों का विकास और शहरीकरण अत्याधिक है परन्तु सघनता अन्य क्षेत्रों के मुकाबले कम है।

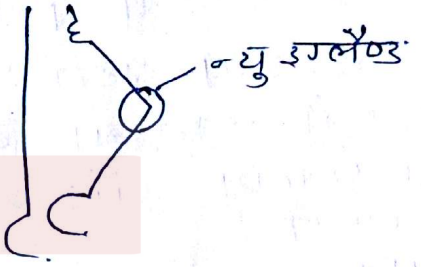

(Q) दक्षिणी महाद्वीपों मे जनसंख्या वितरण की समानता एवं उसके कारण पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए। [150 W, 12½ Marks]

(Q) सामाजिक और सांस्कृतिक कारण जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाली मुख्य कारक है। टिप्पणी करें।

द्वितीयक क्षेत्र :

→ प्राथमिक संकेन्द्रण क्षेत्रों के अलावा विश्व मे द्वितीयक संकेन्द्रीत क्षेत्र है जिन्हे 'Knots & string' के संकेन्द्रण के रूप मे अध्ययन कर सकते है। ऐसे कुछ क्षेत्र है जैसे-

I. पश्चिमी अमेरिका मे कैलिफोर्निया तट के किनारे सैनफ्रांसिसीको, सैन्य डियागो, लॉस ऐंजल्स इत्यादि (हॉलीवुड के विख्यात)

II. लाप्लाटा तंत्र के किनारे पराना नदी का मैदानी भाग (अर्जेण्टाईना और उरुग्वे का आसपास क्षेत्र)

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

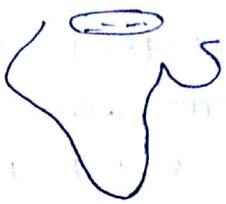

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

ii. नील नदी के किनारे और भूमध्य क्षेत्र

कुछ मुख्य शहर -

1. मैक्सिको, केपटाउन, डरबन, जोहांसबर्ग के आस पास भी जनसंख्या अधिक पायी जाती है।

(i) 'तृतीयक क्षेत्र - इन दोनों के अलावा विश्व में बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ न्यूनतम जनसंख्या है। और यह मुख्यतः भौगोलिक कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं।

जैसे - साइबेरिया, सहारा रेगिस्तान, टैगा क्षेत्र, आस्ट्रेलिया का रेगिस्तानी भाग, गोबी मरुस्थल, आमेजन जंगल, कालाहारी रेगिस्तान, अण्टार्कटिका, अण्टार्टिक इत्यादि

जनसंख्या वितरण को अध्ययन करने के लिए सूचकांक (Index to study population distribution

GENERAL STUDIES HINDI

→ जनसंख्या वितरण का अध्ययन दो कारणों से महत्वपूर्ण है।

I. यह समझने के लिए की लोगों का संकेन्द्रण कहाँ और क्यों है।

ii. किसी भी क्षेत्र विशेष पर जनसंख्या दबाव का अनुमान और उसकी सराहना

→ सामान्यतः जनसंख्या दबाव के लिए हम जनसंख्या घनत्व का अध्ययन करते हैं। यह घनत्व नम्बर /संख्या के मुकाबले अधिक सार्थक है और किसी क्षेत्र विशेष पर जनसंख्या दबाव को प्रदर्शित करता है यह घनत्व निम्न आधारों के आधार पर अध्ययन किया जा सकता है।

i. अंकगणितीय घनत्व (Arithmatic density) - यह प्रदेश की कुल जनसंख्या तथा प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का अनुपात है।

इसके पक्ष के कुछ निम्न बिन्दु:

→ इसकी गणना करना सरल है ~~इसके लिए~~
→ इसके लिए आँकड़े आसानी से उपलब्ध है

इसे विपक्ष मे बिन्दु:

→ इसकी गणना करते समय हम अनविहिन भूभागो को भी शामिल कर लेते है। वसे हुए क्षेत्रो का घनत्व वास्तविकता से कम आता है। जैसे - चीन के पूर्वी भाग का घनत्व 1000 व्यक्ति प्रति वर्ग km है परन्तु चीन का औसत घनत्व लगभग 147 व्यक्ति प्रति वर्ग km है।

ii. कार्यिक घनत्व (physiological density) - यह प्रदेश की कुल जनसंख्या तथा कृषि योग्य भूमि का अनुपात है।

$$\frac{\text{Total population}}{\text{Agricultural land}}$$

→ यह घनत्व अंकगणितीय घनत्व से ज्यादा सार्थक पैमाना है और वास्तविक मे भूभाग जनसंख्या के दबाव को प्रदर्शित करता है

→ यदि हम भारत और चीन की बात करे तो

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

वर्तमान मे चीन की जनसंख्या भारत से अधिक है और भारत 2024 मे चीन को जनसंख्या मामले मे पिछे छोड़ देगा परन्तु फिर भी यदि हम भारत और चीन के कायिक घनत्व की तुलना करे तो भारत बेहतर स्थिती मे होगा क्योंकि भारत के पास करीब 147 मिलीयन हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है जबकि चीन के पास 90 मिलियन हेक्टेयर इसके अलावा चीन की अधिकांश जनसंख्या पूर्वी भागों तक ही सिमित है।

→ भारत मे 147 m.h भूमि (कृषि)

यद्यपि कायिक घनत्व जनसंख्या दबाव को पैमानित करने का अच्छा तरिका है परन्तु किसी भी भूभाग के लिए संसाधन केवल कृषि नही है। और ये भी महत्वपूर्ण है कि

	AD	PD
मिस्त्र	70	35000
अमेरिका	36	78

भारत - 382 (AD)

किसी भूभाग का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए अन्य संसाधनो जैसे ऊर्जा, खनिज, रोजगार इत्यादि को भी संज्ञान मे लिया जाना चाहिए। यह पैमाना कृषि पर आधारित प्रदेशो के लिए सही है परन्तु द्वितीयक और तृतीयक उद्योगो पर आधारित देशो के लिए नही।

(ii). कृषि घनत्व (Agricultural density) –

$$\frac{\text{कृषि पर आधारित जनसंख्या}}{\text{प्रदेश की कृषि योग्य भूमि}}$$

यह कायिक घनत्व का परिष्कृत रूप है जो कुल कृषि योग्य भूमि और कृषि पर आधारित जनसंख्या के परस्परिक संबंध को प्रकट करता है।

iv. आर्थिक घनत्व (economic density) - इसके अंतर्गत वो सम्पूर्ण तथ्य शामिल होते हैं जो मनुष्य की जीविका तथा भरण पोषण के लिए प्रत्यक्षता या परोक्ष रूप से सहायक होते हैं यह प्रदेश की कुल जनसंख्या और देश के सम्पूर्ण संसाधनो का मूल्य जो एक एकल इकाई के रूप मे होता है उसका अनुपात है।

कुल जनसंख्या
देश के संपूर्ण संसाधनो का

सिद्धांतत यह सर्वाधिक उपयोगी तथा सार्थक है परन्तु देश के सम्पूर्ण का मूल्य एकल इकाई के रूप मे मुश्किल है अतः आर्थिक घनत्व का विकास विफल रहा है।

जब भी घनत्व की बात करे तो अंकगणितीय घनत्व की बात करते है

जनसंख्या घनत्व का विश्व वितरण

I. उच्च घनत्व वाले क्षेत्र - i. दक्षिणी एवं पूर्वी एशिया - भारत इसमे, जापान, तटीय चीन, बांग्लादेश, पाकिस्तान इत्यादि

II. उत्तरी पश्चिमी यूरोप - मुख्यतः जनसंख्या घनत्व यूरोप की कोयला पट्टी जो 50° उत्तरी अक्षांश के आस पास है वहाँ ज्यादा है इसमे शामिल है ग्रेट ब्रिटेन, बेल्जियम, हालैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया. इत्यादि।

III. उत्तर-पूर्वी अमेरिका - यहाँ जनसंख्या घनत्व 300 व्यक्ति प्रति वर्ग km है इसमे शामिल कुछ राज्य है जैसे - न्यू इंग्लैंड, न्यू जर्सी, मैसाचुसेट्स, रोहोड आइलैंड

GENERAL STUDIES HINDI

बार्सिलोना - स्पेन

U.P.S.C.

प्रश्न संख्या (Question No.)

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

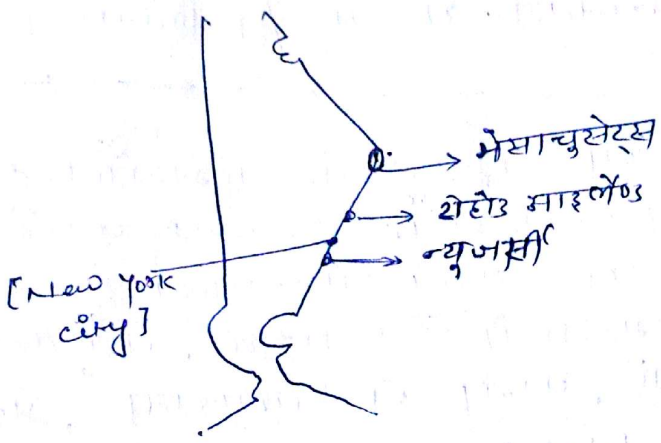

प्रोफेसर नर्स जी की जनसंख्या नियोजन को नरम पड़ रखता है जबकि थ्यूरस कोंडम लगाने से परहेज रखता है तथा धर्म का निरपेक्ष समझता है।

II. मध्यम घनत्व वाले क्षेत्र - यह भू-भाग अधिक घनत्व वाले क्षेत्रों की परिधि में तथा कुछ बिखरे हुए क्षेत्रों में मिलते हैं इसके उदाहरण हैं म्यांमार, लाओस, कम्बोडिया, पश्चिमी एशिया में टर्की, ईरान, इराक इत्यादि

यूरोप में - स्पेन, युक्रेन, युगोस्लाविया इत्यादि

28 April 1991 को विघटन हो गया। आस्ट्रिया, ग्रीस के बीच में था

U.S.A में - कपास तथा मक्का पेटी बैल्ट

अफ्रीका में - घाना, नाईजीरिया, मिस्र, दक्षिणी अफ्रीका इत्यादि

III. निम्न घनत्व वाले क्षेत्र - इन क्षेत्रों में जीवन यापन के साधन सिमित हैं मुख्यतः जीवन यापन के लिए अस्थायी कृषि, आखेट इत्यादि प्रचलित हैं

उदाहरण -

पूर्वी अफ्रीका, उत्तर पश्चिमी, मध्य और पश्चिमी कनाडा, दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया का मर्रे और डार्लिंग बेसिन

IV. अति निम्न क्षेत्र - साइबेरिया, सहारा, अटाकामा, आस्ट्रेलिया के रेगिस्तान, गोबी, कालाहारी, पेटागोनिया (द० अमेरिका) इत्यादि

जनसंख्या वृद्धि / population growth

→ जनसंख्या वृद्धि जनसंख्या भूगोल का एक अति महत्वपूर्ण अंग है और इनपुट है जनसंख्या वितरण को समझने और मानव से संबंधित सभी समस्याओ जैसे गरीबी, पर्यावरणीय समस्याएँ, पानी की उपलब्धता, प्रदूषण, मानव विकास सूचकांक इत्यादि को समझने और उनका अध्ययन करने के लिए।

जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति :

– जनसंख्या वृद्धि का सामयिक और स्थानिक (Temporal & spatial) आधारो पर अध्ययन कर सकते है। सामयिक आधार जनसंख्या वृद्धि मे होने वाली गतिशीलता को प्रकट करता है। स्थानिक मे हम जनसंख्या वितरण के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करते है।

सामयिक जनसंख्या वृद्धि :

– मानव की उत्पत्ति के बाद से भी जनसंख्या मे वृद्धि इतनी अधिक नही रही है और मुख्यतः यह वृद्धि अभी के 200 से 300 सालो मे हुई है जनसंख्या वृद्धि का प्रथम चरण औद्योगिकरण था इसके वजह से तकनिक व प्रौद्योगिकीयो का विकास हुआ उत्पादन के बेहतर तंत्र विकसित हुये जिसके वजह से मानव ने खाद्यान का उच्च उत्पादन करना चालू किया और इससे उसमे भुखमरी, अकाल, गरीबी इत्यादि

समस्याओं पर काबू पा लिया

वर्ष	जनसंख्या	दुगुना होने का समय (doubling time)
8000— 12000 B.C	8 million	1500
1 A.D	below 300 million	200
1650	500 million	80
1850	1 B	45
1930	2 B	42
1975	4 B	
2017	7.6 B	

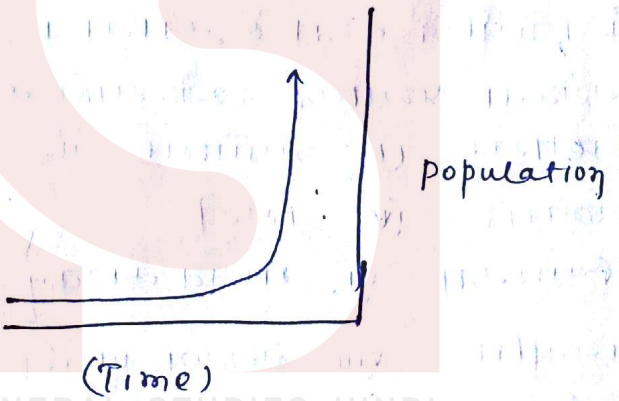

सामयिक कर्व (graph)

को हम J Curve द्वारा दर्शाते हैं।

GENERAL STUDIES HINDI

(Q) जनसंख्या वितरण एक गतिशील अवधारणा है चर्चा करें। [150 word]

Population distribution is a dynamic concept comment.

→ जनसंख्या वितरण निम्न तथ्यों के आधार पर करते हैं।

1. जलवायु संबंधी तथा मानव द्वारा पर्यावरण को अनुकूल परिस्थितियाँ बनाना।

→ कृषि संभावनाओं के क्षेत्रों का विवरण।

→ किन-किन क्षेत्रों में कितना जनसंख्या है।

→ जिसको उच्च घनत्व, निम्न घनत्व, मध्यम घनत्व तथा अति निम्न घनत्व के बारे में।

→ मृत्यु दर, जन्म दर | जनसंख्या वृद्धि

→ राजनीतिक कारण | घनत्व नम्बर

→

संक्षिप्त में

→ जनसंख्या वितरण नियतिवाद ने प्राकृतिक और भौगोलिक पहलू के द्वारा तथा संभववाद ने मनुष्य स्वयं निर्धारित करता है, बताया।।

→ जनसंख्या प्रभावित करने वाले कारक

I. ऐतिहासिक   II. भौगोलिक और प्राकृतिक कारक

III. स्थलाकृति   IV. मिट्टी

IV. अभिगम्यता   VI. मानव कारक → आर्थिक क्रिया, → बहु विवाह, → सामाजिक मान्यताएँ

VII. राजनीतिक   VIII. जलवायु परिवर्तन

IX. जनांकिकी (demography)

→ जनसंख्या वितरण का स्वरूप

प्राथमिक क्षेत्र — I. पूर्वी एशिया (चीन, जापान)   II. दक्षिणी एशिया (भारत, बांग्लादेश, पाकि०)

III. द० पूर्व एशिया (कम्बोडिया, इण्डोनेशिया)   IV. पश्चिम यूरोप (50° उत्तरी अक्षांश) (ब्रिटेन

V. उत्तर पूर्वी अमेरिका (न्यू इंग्लैण्ड, न्यूजर्सी).

द्वितीयक क्षेत्र → Knots & string की तरह जनसंख्या संकेन्द्रण होता है। (द० अमेरिका, प्रान। नदी)

→ नील नदी के क्षेत्र

तृतीयक क्षेत्र → साइबेरिया, अटाकामा, मरुस्थलीय भाग

→ जनसंख्या घनत्व द्वारा वितरण (जनसंख्या)
i. अंकगणितीय घनत्व ii. कायिक घनत्व
iii. कृषि घनत्व iv. आर्थिक घनत्व

→ जनसंख्या घनत्व का विश्व वितरण
I. उच्च घनत्व वाले क्षेत्र - 30-40 यूरोप, 30 पू० अमेरिका
II. मध्यम घनत्व वाले क्षेत्र - अधिक घनत्व के परिधी तथा अन्य क्षेत्र (स्पेन, ब्राजील)
III. निम्न घनत्व वाले क्षेत्र - अस्थायी कृषि तथा आखेट पूर्वी अफ्रीका, द० अमेरिका
IV अति निम्न घनत्व वाले क्षेत्र - साइबेरिया, आस्ट्रेलिया के क्षेत्र

→ जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति का अध्ययन
I सामयिक (Temporal) II स्थानिक (Spatial)

जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान प्रवृत्ति

	1985	2010	2017
Asia	65.44	63.96	59.59 (60)
Africa	12.39	16.01	16.59 (17)
Europe	15.94	11.28	9.94
N.A	6.01	5.28	4.83
L.A	9.14	9.19	8.62

→ W.P.R. 2017 के अनुसार विश्व की जनसंख्या 2017 तक 7.6 बिलियन पहुँच चुकी है और वर्तमान विश्व की वृद्धि दर 1.01% प्रति वर्ष है जो 10 वर्ष पहले 1.24% प्रति वर्ष थी

→ वर्तमान वृद्धि दर से विश्व करीब हर वर्ष 83 मिलियन

1 million = 10 Lakh
1 billion = 100 crore

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

जनसंख्या की वृद्धि करेगा और आने वाले 13 सालों मे 1 बिलियन लोगो की वृद्धि होगी 2050 तक यह जनसंख्या 9.8 बिलियन होगी और 21वी शताब्दी यह जनसंख्या 11.2 बिलियन होगी।

→ 2050 तक जो 2.2 बिलियन लोग बढ़ेंगे उसमे अफ्रिका का योगदान करीब 1.3 बिलियन होगा एशिया करीब 750 मिलियन लोगो की वृद्धि करेगा।

→ भविष्य मे उत्तरी अमेरिका अपने जनसंख्या नियमन की नीतियो की वजह से अपनी जनसंख्या को स्थिर ही रखेगा जबकि अगर हम लैटिन अमेरिका की बात करे जो दक्षिणी गोलार्द्ध मे होने के बावजूद मानवीय सूचकांको को बेहतर रख पाया है उसमे जनसंख्या प्रवास के ज्यादा अवसर होने के वजह से जनसंख्या वृद्धि इतनी ज्यादा नही होगी। और अनुमानत या तो स्थिर रहेगी या उसमे ह्रास देखा जायेगा।

→ यूरोप की अगर हम बात करे जहाँ वृद्ध लोगो की जनसंख्या ज्यादा है तथा जन्मता दर (Fertility Rate) कम है वहाँ भी जनसंख्या का ह्रास होगा।

→ विश्व मे जनसंख्या दर की वृद्धता:

a. विश्व मे सबसे ज्यादा जनसंख्या वृद्धि सबसे ज्यादा अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, ओसियाना (Australia) तथा यूरोप होगी।

b. विश्व मे जनसंख्या वृद्धि दर मे लगातार गिरावट होगी तथा 2010-15 जो अफ्रिका

GENERAL STUDIES HINDI

के वृद्धि दर 2.6 % प्रति वर्ष थी जो 2045-50 तक 1.8 और 2095-2100 मे 0.66 होने की संभावना है।

C. अफ्रीका मे इस वृद्धि दर कमी के बावजूद जनसंख्या मे वृद्धि होगी इसका प्रमुख कारण आयु संरचना है जिसमे युवाओ की संख्या ज्यादा होगी

D. विश्व के 47 अल्पविकसीत देशो मे (Least d.Co) जनसंख्या वृद्धि उच्च होगी क्योंकि वो जनांकिकी की पहली और दूसरी संक्रमण अवस्था मे है यद्यपि अल्प विकसीत देशो की जनसंख्या वृद्धि जो अभी 2.4 % प्रति वर्ष है उसमे कमी आयेगी परन्तु 2017 से 2050 तक इनकी संख्या मे दुगुना से भी ज्यादा वृद्धि होने की संभावना है।

E. विश्व मे 51 ऐसे देश है जिनकी 2017 से 2050 तक के बीच जनसंख्या मे ह्रास होगा और यह ह्रास 15% तक हो सकता है। उन देशो मे लिथुआनिया, हालैण्ड, सर्बिया, यूक्रेन इत्यादि देश है।

GENERAL STUDIES HINDI

F. यूरोप के देशो मे प्रजननता दर अभी 1.6 जन्म प्रति महिला है जो 2045-50 तक 1.8 जन्म प्रति महिला होने की संभावना है। परन्तु इससे भी जनसंख्या का संकुचन नही रुकेगा।

G. 2017-50 के बीच विश्व मे 50% से अधिक वृद्धि केवल 9 देशो मे ही संकेन्द्रीत होगी - भारत नाईजिरिया, कांगो, पाकिस्तान इथोपिया, तंजानिया, युगाण्डा, इण्डोनेशिया और US

⇒ प्रजननता और इसको प्रभावित करने वाले कारक

प्रजननता – एक निश्चित समय अवधी में किसी स्त्री या स्त्री समूह द्वारा प्रदत्त सजीव जन्मो की वास्तविक संख्या प्रजननता (Fecundity) कहलाती है जबकि किसी स्त्री की उसकी सम्पूर्ण प्रजनन अवधी में उसका प्रजनन सामर्थ्य प्रजनन क्षमता (Facundity) कहलाता है।

प्रजननता के निर्धारक :

→ जैविक (Biological)
→ जनसांख्यिकी
→ सामाजिक / सांस्कृतिक

1) जैविक –

I. प्रजाति – प्रजननता का कठिन मापक है परन्तु कुछ शोध करताओ के अनुसार आस्ट्रोयड, मंगोलायड इत्यादि जो मानव प्रजाति हैं उनकी जननता में अंतर पायी जाती है।

II. प्रजनन क्षमता और पुरुषो की संतानोत्पत्ति क्षमता पर –

III. स्वास्थ्य

→ मृत्यु दर – शिशु मृत्यु दर होने (अधिक) से लोगो की मानसिकता ज्यादा बच्चे जन्म देने की होती है ताकि ज्यादा बच्चे जीवित रह सके। Ex – भारत जहाँ 20 % जनसंख्या वृद्धि मृत्यु दर के कारण योगदान है। (IMR)

→ जीवन प्रत्याशा → छोटा परिवार → समृद्धि और इस आशा में कम प्रजननता

(2) जनसांख्यिकी

I. युवा - जिस देश मे पुर्नउत्पादन वायु मे (15-44) लोगो का अनुपात ज्यादा है वहाँ पर जनसंख्या वृद्धि आधार (Base) के कारण ज्यादा होगी भारत की जनसंख्या मे 60% वृद्धि इसी कारण है।

II. वैवाहिक स्तर तथा वैवाहिक अवधी - '

31.5% नगरीकरण भारत मे

III. नगरिकरण - शहरीकरण या नगरीकरण की वजह से लोगो की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ सुधरेगी तथा लोग अपने परिवार को सिमित रखने की कोशिश करेगे ताकि वो अपने सीमित संसाधनो का उपयोग जीवन स्तर को सुधारने, मनोरंजन के आयामो को विस्तृत करने आदि पर कर सके। इसमे एक तथ्य यह भी है कि प्रवास मुख्यतः लिंग प्ररख होता है जिसमे पुरुष रोजगार के लिए शहरो की तरफ प्रवास करते है।

IV. शिक्षा - भारतीय जनसांख्यिकी संस्थान के 1961 आँकड़ो के मुताबिक महिला शिक्षा और प्रजनता मे निम्न संबंध पाया जाता है।

कक्षा शिक्षा	प्रजननता
12th	2
10th	4.6
8th	5
5th	6

BMW - अत्तरी इटली केडउसी

V. स्त्रियो की क्रियाशीलता - स्त्रियो की क्रियाशीलता भी प्रजननता से संबंध रखती है जहाँ महिलाओ की क्रियाशीलता ज्यादा होगी वहाँ अर्थव्यवस्था मे भागीदारी ज्यादा होगी और यह भागीदारी महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देगी

जिसके वजह से महिलायें अपने जीवन से संबंधित स्वतंत्र निर्णय ले सकेगी और यह प्रजननता को कम करने मे सहायक होता है। जेडरिसी के अनुसार दक्षिणी इटली जो अभी भी प्राथमिक उद्योगो मे समन्वय है और जहाँ ग्रामीण लोगो की प्रतिशत ज्यादा है वहाँ उत्तरी इटली (जहाँ नगरीकरण ज्यादा है) के मुकाबले प्रजननता अधिक है क्योंकि शहरो मे महिला क्रियाशीलता का प्रतिशत ज्यादा होता है।

(3) सामाजिक और सांस्कृतिक कारक -

I. संतान इच्छा -

II. बाल विवाह

III. महिला सशक्तिकरण -

(4) सरकारी नीतियाँ - सरकार जनसंख्या नियोजन के लिए अपने प्रदेश मे अनुकूलतम जनसंख्या के लिए प्रजनता को प्रोत्साहन दे सकती है उदाहरणात रूसीया (जहाँ 1 बच्चे से अधिक होने पर सरकार पुरस्कृत करती है)

(5) धार्मिक मान्यताएँ - परिवार नियोजन के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण प्रजननता को बढ़ावा दे सकता है। जैसे ईसाई धर्म कैथोलिक समुदाय परिवार नियोजन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है अतः इनमे जनसंख्या वृद्धि दर उच्च है और इसका निष्कर्ष हम दक्षिणी यूरोप की आबादी से भी निकाल सकते है इसके विपरित प्रोटेस्टेंट समुदाय परिवार नियोजन के प्रति नरम दृष्टिकोण रखता है। अतः इनमे जनसंख्या वृद्धि दर निम्न है।

(0) प्रजननता को जनसांख्यिकी कैसे प्रभावित करती है [150 शब्द]

जनसंख्या सिद्धांत (Theories)

→ जनसंख्या की समस्या कोई नवीन समस्या नहीं है और मानव सभ्यता विकास के साथ ही कई जनसांख्यिकी समस्याओं का सामना कर रही है माल्थस प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने वैज्ञानिक तौर पर जनसंख्या वृद्धि का प्रथम सिद्धांत प्रतिपादित किया था उनके पूर्ववर्ती विचारों में पुत्र प्राप्ति का लालसा पर बल था क्योंकि तत्कालिन राज्य अन्य राज्यों पर युद्ध के लिए तत्पर रहते थे और उसके लिए अधिक पुरुषों की आवश्यकता होती थी।

→ माल्थस प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने वैज्ञानिक तौर पर जनसंख्या वृद्धि का प्रथम सिद्धांत प्रतिपादित किया।

प्राचीन विचार जनसंख्या वृद्धि को राष्ट्र हित में मानते थे रोमन तथा यूनान में जनसंख्या नियंत्रण पर प्रथमतः बात की गई जहाँ प्लूटो, अरिस्टोटल, मस्तु ने जनसंख्या वृद्धि के साथ सीमित भूमि पर अधिक जनभार हो जाने पर उसे रोकने के लिए राज्य को चेताया तथा इसके नियंत्रण के लिए उपाय भी सुझाया मध्यकालिन ईसाई समुदाय जनसंख्या को नीति (Morality) का विषय मानते थे और जनसंख्या नियमन के लिए अपनायें गये कृत्रिम साधनों जैसे- काम हत्या, गर्भपात आदि को अनैतिक और पाप मानते थे।

→ प्लूटो, अरिस्टोटल, अरस्तु ने (रोमन, यूनान) में जनसंख्या के भार के लिए राज्य को इसके संबंध के बारे में बताया।

→ मध्यकालिन ईसाई समुदाय जनसंख्या को नीति (Morality) का विषय मानते थे।

→ इसके बाद वाणिकवादी (Mercantalism) विचारकों ने जनसंख्या के गुणात्मक (Quantitative) एवं परिणात्मक (Qualitative) दोनों पक्षों पर ध्यान दिया।

→ जनसंख्या वृद्धि आवश्यक है क्योंकि इससे एक

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

और श्रम शक्ति बढ़ेगी और उत्पादन में वृद्धि होगी तथा दूसरी ओर सैन्य शक्ति बढ़ेगी जिससे राज्य शक्तिशाली होगा।

जनसंख्या → सस्ते श्रमिक → उत्पादन लागत ↓

↓

समृद्धि/सम्पन्नता ← आयात ↓ ← निर्यात ↑

माल्थस का जनसंख्या विचार/सिद्धांत

→ माल्थस के विचारों की पृष्ठ भूमि तथा उसके उत्पत्ति को हम तत्कालिन यूरोप की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों से समझ सकते है जहाँ निरंतरता औद्योगिकरण तथा नगरिकरण के लाभों के संबंध में संदेह उत्पन्न हो रहा था और इस संदर्भ में माल्थस ने अपना विचार रखा।

खाद्यानो का मूल्य निरंतर बढ़ने लगा था और बेरोजगारी, निर्धनता, महामारी आदि फैलने लगी थी औद्योगिकरण के बाद का युग कुछ समय के लिए सम्पन्नता और समृद्धि लेके आया था परन्तु जीवन स्तर में सुधार और जीवन प्रणाली में सुधार ज्यादा समय तक नही टिक पाया।

→ नियतवादी
→ आशावादी/निराशावादी
→

→ माल्थस ने संख्या का प्रथम वैज्ञानिक सिद्धांत अपने निबंध An essay on the principal of population (जनसंख्या सिद्धांत पर एक निबंध) में दिया था माल्थस एक अर्थशास्त्री थे जो जनसांख्यिकी (demographer) में रूपांतरित हो गया उन्होने ब्रिटेन के अनुभवो के आधार पर जनसंख्या का एक सामान्यीकृत (Generalation) सिद्धांत प्रस्तुत किया

→ यह सिद्धांत मानव-पर्यावरण संबंधो पर एक निराशावादी सिद्धांत है जिसमे माल्थस के अनुसार समाज

Assum

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

और जनसंख्या निश्चित तौर पर अपनी मॉंग और आशा के (demand & expection) भार मे दब जायेगी यह जनसंख्या को समझने और उसकी वृद्धि का अनुमान लगाने की एक पारिस्थितिकी अप्रोच (approach) है उनका दृष्टिकोण मानवतावादी था और उनकी सोच मानव कल्याण से प्रेरित थी।

(Assum)

माल्थस के मान्यतायें — माल्थस के अनुसार मनुष्य एक अक्रिय (passive) पराधीन जीव है जो प्राकृतिक, जैविक क्रियाओ (Natural Biological instincts) के भार तले दबे रहता है।

→ उसके अनुसार मनुष्य मे काम वासना स्थिर रहती है जिसके परिणामस्वरूप संतान उत्पत्ति की इच्छा भी स्वभाविक रहती है।

→ मनुष्य के लिए खाना जीवित रहने के लिए आवश्यक है और उसके लिए खाद्यान्न की आपूर्ति कृषि पर निर्भर है परन्तु कृषि मे उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of diminishing Return) क्रियाशील होता है। तथा खाद्यानों मे वृद्धि अंकगणितीय दर से होती है।

GENERAL STUDIES HINDI

→ आर्थिक समृद्धि और संतानोत्पत्ति मे सीधा संबंध होता है

→ प्रथम दो नियम एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी है जहाँ मनुष्य एक समय पर किसी एक क्रिया मे संलग्न रह सकता है।

जनसंख्या वृद्धि और खाद्य आपूर्ति मे असंतुलन

(क) जनसंख्या मे गुणोत्तर वृद्धि

(ख) खाद्य पदार्थों मे अंकगणितीय समानांतर वृद्धि

(क) (ख)

→ जनसंख्या वृद्धि और खाद्य आपूर्ति मे असंतुलन और उसके लिए क्रियाशील तत्व / नियंत्रक

प्राकृतिक नियंत्रक / +ve check / miseries (कष्ट) — अकाल, भुखमरी, महामारी जैसी आपदाएँ

कृत्रिम प्रतिबंधक, नियंत्रक ब्रह्मचर्य, आत्म संयम — (−)ve check

↓

जनसंख्या वृद्धि और खाद्यान्न मे संतुलन

↑ माल्थस

Note → प्राकृतिक की खाने की मेज सिमित अतिथियो के लिए है अतः बिना नियंत्रण के आने वाले को आवश्य ही भूखो मरना होगा।

सिद्धांत का विश्लेषण :

(माल्थस के अनुसार जनसंख्या 25 वर्षों मे दुगुनी हो जाती है।)

→ माल्थस के अनुसार जनसंख्या 25 वर्षों मे दुगुनी हो जाती परन्तु अगर हम विश्व के जनसंख्या वितरण को औद्योगिकरण के बाद देखे तो 18वी शताब्दी के बाद हमारी जनसंख्या को 80 वर्ष लगे है दुगुना होने मे।

1850 – 1 B
1930 – 2 B
1975 – 4 B

→ माल्थस की जैविक मान्यताओ पर भी प्रश्न चिह्न है माल्थस ने संतान उत्पत्ती को मनुष्य की जैविक इच्छा बताया है और इसे स्वभाविक बताया है जबकि मनुष्य मे संतानोत्पत्ती की इच्छा सामाजिक कारणो द्वारा प्रेरित होती है और इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम भारतीय समाज

मे पुत्र प्राप्ती की लालसा मे देख सकते है।

→ मनुष्य मे काम वासना स्थिर नही है जैसे-जैसे जीवन स्तर का उत्थान होता है जीवन प्रणाली मे सुधार आता है उसके साथ-साथ काम वासना तथा संतानोत्पत्ति की इच्छा भी खत्म हो जाती है।

माल्थस एक पादरी था

→ माल्थस के अनुसार मनुष्य हमेशा कामवासना और खाने मे ही संलग्न रहता है परन्तु वो यह भूल गया था कि मनुष्य एक जानवर नही है बल्कि एक बौद्धिक प्राणी है जो रचनात्मक कार्यो मे भी संलग्न रह सकता है।

1963 मे सबसे अधिक

→ माल्थस के अनुसार कृषि मे खाद्यानो की वृद्धि दर समानांतर होगी और कृषि मे उत्पत्ति ह्रास नियम लागु होता है और इसके अनुसार वो भविष्य मे खाद्य संकट और भुखमरी की चेतावनी विश्व को दे रहा था और माल्थस के अनुसार विश्व 18वी शताब्दी मे कृषि के अपने उच्च उत्पादन स्तर पर परन्तु वो कृषि मे होने वाले विकास जैसे हरित क्रांति, जैव तकनीकी का अंदेशा नही लगा पाया था जिनसे खाद्य उत्पादकता असिमित तोड़ कर उपलब्ध करवा दी गयी थी जो माल्थस के सोचने के दायरे से भी बाहर थे यह भारत के लिए सही है अगर हम देखे भारत विश्व की जनसंख्या मे दूसरा बड़ा देश होते हुए भी अकाल भुखमरी इत्यादि समस्याओ का समाधान निकाल पाया है।

→ माल्थस ने तकनीकी विकास की अपेक्षा की थी क्योंकि जन्म लेने वाला बच्चा अपने साथ केवल मुँह ही नही लाता है बल्कि दो हाथ भी लाता है।

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

ईसाई धर्म से

→ माल्थस जनसंख्या नियंत्रण के लिए दो प्रकार की नियंत्रण का बात करता है।

1. प्राकृतिक नियंत्रक जिन्हे सकारात्मक /(+)ve check / Misiery (कष्ट) की भी संज्ञा दी जाती है माल्थस के अनुसार जनसंख्या असंतुलन से मानव और प्रकृति के बीच सामंजस्यता नही रहेगी और प्राकृति, अकाल, भुखमरी, महामरी, चक्रवात, भुकम्प आदि आपदाओ से प्राकृतिक मे जनसंख्या को नियंत्रीत रखेगी परन्तु इसमे निम्नलिखित कमीयाँ है।

(a) यह विचारधारा नियतवादी है और मनुष्य की क्षमता पर संदेह रखती है मनुष्य ने तकनीक के आधार पर मनुष्य जाती को इन आपदाओ से बचाया है और यदि हम भारत की बात करे तो माल्थस के विचारधारा के अनुसार भारत मे अकाल, भुखमरी और महामारी से अधिक लोगो की मृत्यु होनी थी परन्तु 1950 के बाद भारत के राजनीतिक नेतृत्व तथा खाद्यान उपलब्धता के कारण हमने अकाल जैसी समस्याओ का हमने पूर्णतः निवारण कर लिया।

(b) → माल्थस के अनुसार गरीब समाज मे प्राकृतिक नियंत्रक प्रभावी होगे परन्तु इस विचार धारा से माल्थस का गरीबो के प्रति पूर्वाग्रह (से ग्रसित) छलकता है।

(2) कृत्रिम नियंत्रक /(-)ve check – कृत्रिम प्रबंधको मे आत्म संयम, ब्रह्मचर्य तथा वेश्यावृत्ति, सम लैंगिकता जैसी बुराईयो का माल्थस ने

GENERAL STUDIES HINDI

समर्थन किया है और यह नियंत्रण प्राकृतिक नियंत्रकों के मुकाबले कम प्रभावी होते हैं परन्तु माल्थस अपने धार्मिक विचारधाराओं के कारण चिकित्सकीय निरोधकों का विरोध किया था और वह जन्म नियंत्रण से संबंधित भविष्य में होने वाले (विकसित) नयी चिकित्सीय प्रणाली, सरकारी नीतियों का संदेश नहीं लगा पाया।

→ माल्थस की जो मान्यता थी आर्थिक सम्पन्नता या विकास के साथ जनसंख्या बढ़ेगी उसमें भी वो गलत था यदि हम भारत की बात करें तो जनसंख्या वृद्धि की उच्चतम दर 1963 में थी परन्तु उसके बाद जनसंख्या वृद्धि में लगातार ह्रास हुआ है। इसके विपरीत 1990 के बाद हमने अपनी अर्थव्यवस्था को हिन्दू वृद्धि दर (3.3) से मुक्ति दिलाकर इसे 6% की वृद्धि दर पर लेकर गये।

प्रासंगिकता / Revelance

→ माल्थस सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है और व्यापक आलोचना के बावजूद विश्व के अनेक देशों में जनसंख्या विस्फोट तथा उससे उत्पन्न होने वाली समस्याएँ इस सिद्धांत की व्यवहारिकता तथा समर्थता को पुष्ट करती हैं आज के समय की पर्यावरणीय तथा जलवायु परिवर्तन की जड़ें माल्थस की विचारधारा में समाहित हैं। इसी विचारधारा से प्रवाहित होकर पश्चात्य देशों में जनसंख्या नियंत्रण के लिए कृत्रिम निरोधों का प्रयोग चालू किया तथा इसमें इसके उपर शोध भी किया। माल्थस का विचारधारा आज के समय में नवमाल्थस वाद के रूप में पुनः उभरकर आयी है।

GENERAL STUDIES HINDI

1968 में ↑

तथा नये सिद्धांत जैसे 'Limits to growth' अतिविकास अतिरेकवादी विचारधारा इत्यादि माल्थस से ही प्रभावित है।

(Q) माल्थस की विचारधारा मे पारिस्थितिकी की झलक मिलती है। [15 Marks, 150 शब्द]

(Q) माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत का विश्लेषण कीजिए तथा यह सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है।

(Q) माल्थस की विचारधारा पूँजीवाद से प्रभावित है [150]

कार्ल मार्क्स

हीगल - द्वंद्वात्मक भौतिकवाद / Dialectical Materialism

ऐतिहासिक भौतिकवाद / Historical "

↓

Primitive (आदिम)

↓

गुलामी

↓

सामंतवाद

↓

पूँजीवाद

↓

समाजवाद

↓

साम्यवाद

yin (+) Thesis — yin (−) antithesis

↘ ↙

synthesis

→ मार्क्स ने जनसंख्या संबंधी किसी सिद्धांत का अलग से प्रतिपादन नही किया था किन्तु उसकी पुस्तक "दास कैपिटल" मे साम्यवादी अर्थव्यवस्था के विवेचन मे जनसंख्या के संबंध मे जिन विचारों का विश्लेषण किया गया है उन्ही के आधार पर मार्क्स के जनसंख्या सिद्धांत की व्याख्या की जाती है।

मार्क्स सामूहिक उत्पादन प्रणाली मे कैसे

GENERAL STUDIES HINDI

परिवर्तन आता है और कैसे वह सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है इसका अध्ययन कर रहे थे और इसी मे मार्क्स का जनसंख्या सिद्धांत झलकता है।

यह एक साम्यवादी सिद्धांत है जहाँ मार्क्स सुझाव देते है कि पूँजीवाद अपनी प्राकृतिक मौत मर जाएगा और वह एक ऐसे तंत्र की/से स्थापना होगा जहाँ उत्पादन प्रणाली समूह द्वारा नियंत्रित होगा और वह पहले समाजवाद और उसके बाद साम्यवाद की तरफ अग्रसर होगा।

→ कार्ल मार्क्स के अनुसार जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत अर्थव्यवस्था आर्थिक संक्रमण (Economic Transition) का सिद्धांत है और उनके जनसंख्या सिद्धांत को साम्यवाद के सिद्धांतो से समझ सकते है क्योंकि जनसंख्या और इससे संबंधित जनसांख्यिकी सामाजिक संरचना और सामाजिक हराटकी (Heirarchy) की झलक देते है। जो एक अर्थव्यवस्था मे स्थित है।

पूँजीवाद

अमिर / बुर्जुआ | सर्वहारा / गरीब

अमिर / बुर्जुआ ↓

बेरोजगारी → पूँजी → लाभ → श्रमिक → profit ↓

लागत ← मशीनकृत

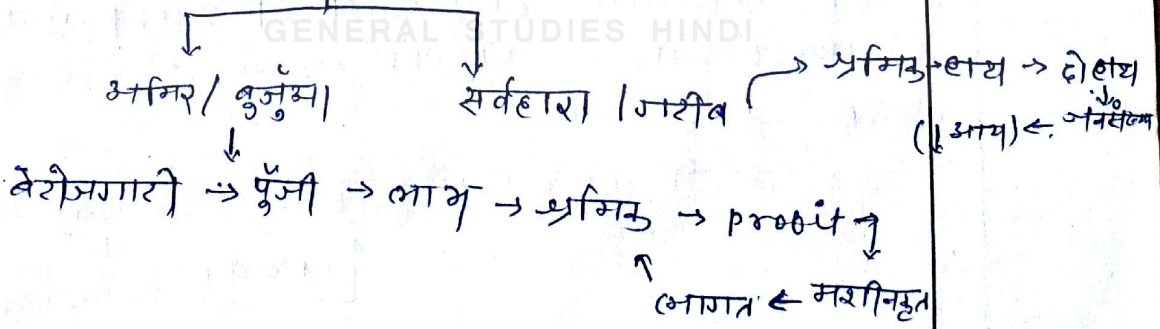

सर्वहारा / गरीब → श्रमिक → हाथ → दो हाथ ↓ जनसंख्या → (↓ आय)

→ मार्क्स के अनुसार मानव के जनसंख्या वृद्धि सामाजिक संरचना और उसकी Heiracy मे परिवर्तन के वजह से है जिसमे समाज अमीर और गरीब मे विभाजित हो जाता है।

→ धनी वर्ग उत्पादनों का (संसाधनों) स्वामी होता है और अतिरेक मूल्य अर्जित करता है (surplus value) यह अतिरेक मूल्य इस वर्ग द्वारा पूँजी के रूप में संचित होता है जबकि दूसरी ओर निर्धन या सर्वहारा वर्ग है जिसकी सम्पत्ति श्रम है और वही उसका निवेश (investment) भी है अतः वह श्रम संचय (जनसंख्या वृद्धि) का प्रयास करता है मार्क्स के अनुसार -

I. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था शोषण पर आधारित है जिससे धनिक वर्ग मजदूरों को कम मजदूरी देता है और मजदूरी में कटौती करके अपने लाभ को अधिकतम करने का प्रयास करता है और अधिकाधिक धन अर्जित करता है।

पूँजीवादी → कम मजदूरी → अतिरेक मूल्य → पूँजी / मशीन
↓
बेरोजगारी ← श्रमिक की छंटनी

II. श्रम वर्ग इस अर्थव्यवस्था में शोषण का शिकार होता है और इस वर्ग के लिए उसका कौशल केवल और केवल हाथ हैं वो ही उसकी पूँजी या सम्पत्ति हैं और उसे ही वो बढ़ाने की कोशिश करता है।

मजदूरों को कम मजदूरी → जीवन स्तर निम्न
↓
(कुचक्र) ← जनसंख्या वृद्धि
vicious cycle

III. कम मजदूरी के कारण श्रमिक वर्ग अपने हाथों को बढ़ाते ही रहता है बेरोजगारी बढ़ती है तो हाथ भी बढ़ते हैं और फिर वो बेरोजगारी को बढ़ाते हैं और यह कुचक्र चलता ही रहता है।

IV. मार्क्स ने इसके लिए समाधान साम्यवाद पर

GENERAL STUDIES HINDI

आधारित सामाजिक और आर्थिक संरचना को बताया है इस व्यवस्था मे उत्पादन के साधन सर्वहारा समाज द्वारा संचालित किये जाते है इस समाज मे आय वितरण की असमानताऐ दूर हो जायेगी और प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि होगी तथा सामान्य स्तर मे सुधार होगा जिससे बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न नही होगी इससे जीवन स्तर और जीवन प्रणाली मे उत्थान होगा लोगो को स्वास्थ्य सुविधाये पाने के लिए पौष्टिक तत्व उपलब्ध होंगे जिसका परिणाम होगा मृत्यु दर मे कमी।

→ मार्क्स का यह कहना था कि पूँजीवादी समाज मे गरीबी होगी और जनसंख्या स्तर बढ़ेगा व्यवहारिक रूप से गलत था विश्व की कुछ महत्वपूर्ण पूँजीवादी अर्थव्यवस्थाये जैसे U.S, U.K, नार्वे, फिनलैण्ड, जर्मनी इत्यादि देशो मे अपने यहाँ जनसंख्या को नियंत्रित किया है. और अपने यहाँ श्रमिको को कानून के द्वारा अधिकार प्रदान किये है और उनके कल्याण के लिए कार्य किया।

→ द्वितीय विश्वयुद्ध के 50 साल के बाद भी जनसंख्या से संबंधित समस्याऐ समाजवादी तथा साम्यवादी अर्थव्यवस्थाओ मे अधिक है और पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था की अपेक्षा साम्यवादी अर्थव्यवस्था मे गरीबी अधिक है।

→ वर्तमान जनसांख्यिकी के अनुसार गरीबी जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार है परन्तु उस अर्थ मे नही जैसा मार्क्स ने समझाया था अशिक्षा, लैंगिक अधिकार, स्वास्थ्य सेवाओ की सीमित पहुँच और इसकी उपलब्धता निरोधको

की उपयोग की जानकारी का अभाव इत्यादि गरीबी में पाई जाती और जिसके कारण गरीब व्यक्ति परिवार नियोजन पर ध्यान केन्द्रीत नही कर पाते है और जनसंख्या वृद्धि होती है इस तरह जनसंख्या वृद्धि की जड़े सामाजिक और आर्थिक गरीबी मे है जहाँ विकास के अवसर सीमित है।

→ यद्यपि मार्क्स की विचारधारा पूर्णतः सही नही है जिस तरह उसने गरीबी को जनसंख्या और समाज विभक्ति से जोड़ा था परन्तु मार्क्स ने जिस हिसाब से जनसंख्या और उसकी संख्या को संसाधन माना उसका श्रेय हमे मार्क्स को देना चाहिए जनसंख्या संबंधी समस्याओ को हल करने के पिए जिस हिसाब से आज की सरकारे मानव कल्याण की नीतियाँ बना रही है वो मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित है।

माल्थस और मार्क्स मे अंतर

→ माल्थस के अनुसार मनुष्य प्रकृति के आगे विवश है और उसका नियतिवादी सिद्धांत प्रकृति के द्वारा नियंत्रित हो रहा है जबकी मार्क्स के अनुसार मानव बुद्धिजीवी है और प्रकृति पर नियंत्रण कर सकता है और अपना इतिहास खुद अंकित करता है।

→ माल्थस के अनुसार मनुष्य का काम वासना पर कोई नियंत्रण नही है और इससे संतानोत्पत्ति स्वभाविक है परन्तु मार्क्स के अनुसार मनुष्य बुद्धिजीवी है और कामवासना पर नियंत्रण कर सकता है उसके अनुसार श्रम संचय

जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार है।

→ माल्थस के अनुसार गरीबो में प्रजनन। काम-वासना से प्रेरित है और उनकी संतान प्रकृति पर एक भार होगी जबकि मार्क्स के अनुसार बच्चे उत्पादन वस्तु है और परिवार का जीवन स्तर बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

→ माल्थस के अनुसार गरीब व्यक्ति जबकि मार्क्स के अनुसार अमीर व्यक्ति जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार है।

→ माल्थस के अनुसार खाद्यान का उत्पादन अंकगणितीय वृद्धि से बढ़ता है जबकि जनसंख्या ज्यामितीय गति से और इस कारण। खाद्यान और जनसंख्या अनुपात में असंतुलन होता है और मानव खाद्यानो का असीमित उत्पादन भी नही कर पाता जबकि मार्क्स के अनुसार मानव तकनीक के द्वारा खाद्यान का उत्पादन कर सकता है और भुखमरी का समस्या का निवारण कर सकता है।

→ माल्थस निराशावादी तथा मार्क्स आशावादी प्रवृत्ति के थे।

→ माल्थस गरीबो के कानून के खिलाफ था क्योंकि वो गरीबो को जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार मानता जबकि मार्क्स गरीबो के लिए जन कल्याण की नीति का पक्षधर था क्योंकि उसके अनुसार अमीर जनसंख्या वृद्धि के लिए जिम्मेदार है।

(Q) जनसंख्या पर मार्क्स का विचार अधिक मानवीय है।

(Q) जनसंख्या नियंत्रण के लिए मार्क्स का विचार ज्यादा व्यवहारिक है टिप्पणी कीजिए।

[150W]

GENERAL STUDIES HINDI

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

प्रवास और संचरण मे अंतर है।

Diffusion ↓ (विस्तार)

प्रवास

MIGRATION

→ सामान्यतः प्रवास का मतलब निवास स्थान को बदलते हुए एक भौगोलिक ईकाई से दूसरी ईकाई के लिए भौगोलिक गतिशीलता का एक रूप है। हर कोई संचरण (movement) प्रवास नही होता क्योंकि प्रवास का मतलब जनसंख्या की गतिशीलता के साथ उसकी भौगोलिक स्थिति मे परिवर्तन भी, निम्नलिखित संचलन प्रवास की श्रेणी मे नही आते।

→ पर्यटन

→ मौसमी प्रवास

→ Daily commuting (संचलन दैनिक)

→ sojourners / सोजोरनर्स [- मध्य पूर्वी एशिया मे बाहरी व्यक्तियो को नागरिकता का अधिकार नही दिया जाता भले हो वो 2 या 3 दशकु से वहाँ कार्य कर रहे हो। प्रथमतः यह शब्द HDR (Human Development Repot) 2009, के द्वारा दिया गया था। [Over comming barrier]

प्रसार कहा जाता है

प्रवास कारक / factor of migration

→ भौगोलिक

→ आर्थिक

→ राजनीतिक

→ सांस्कृतिक

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

i) ~~भौगोलिक या जलवायु~~ -

→ जनसंख्या स्थानांतरण के आकार, गति, एवं दिशा को दो विपरित गुणो वाली शक्तियाँ से नियंत्रित करती है जिन्हे आकर्षण शक्ति (PULL) तथा प्रतिकर्षण (PUSH) कहते हैं। तथा प्रवास को प्रभावित करने वाली कारको को हम निम्नलिखित वर्गों मे विभाजित कर सकते हैं।

(1) भौगोलिक या प्राकृतिक कारक - प्रवास के लिए अनुकूलतम जलवायु तथा भौगोलिक परिस्थितियाँ महत्वपूर्ण कारक है जो आकर्षण और प्रतिकर्षण दोनो की भूमिका अदा करते हैं। बाढ़, भूकम्प, ज्वालामुखी इत्यादि के वजह से लोगो का प्रवजन (out migration) होता है। जबकि मैदानी भू-भाग, पर्याप्त वर्षा वाले क्षेत्रों मे लोगो को आकर्षित करते हैं उदाहरणतः मानव की उत्पत्ति कुछ विद्वानो द्वारा अफ्रिका या मध्य एशिया मे मानी जाती है परन्तु जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओ के कारण मानव का विस्तार विश्व के अन्य भू-भागो की तरफ हुआ।

GENERAL STUDIES HINDI

(2) आर्थिक कारक - जीवन स्तर की गुणवत्ता उच्च करने के लिए आर्थिक प्रक्रियाये मानव के लिए आवश्यक है अतः वो भू-भाग जो मानव के आर्थिक (विकल्पो) क्रियाओ को नई स्वतंत्रता तथा नया विकल्प प्रदान करते है. मानव उस क्षेत्र की तरफ प्रवासित होता है। HDR, 2009 के अनुसार प्रवास के समय मानव आशा और अनिश्चितताओ मे यात्रा करता है परन्तु वो हमेशा आश्वासित रहता है कि गंतव्य

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

स्थान उसके जीवन को नई राह प्रदान करेगा। और इसलिए वो प्रवास करता है आर्थिक कारको मे महत्वपूर्ण कारक भौगोलिक स्थितियो से निर्धारित होते है। जैसे - उच्च कृषि भूमि वाले क्षेत्र जहाँ मानव खाद्यान्न का उत्पादन करके अपने जीवन स्तर की गुणवत्ता को बढ़ा सकता है। इसी मे ग्रामीण इलाको से शहर की तरफ प्रवास इसलिए होता है कि शहरो मे आर्थिक अवसरो की उपलब्धता अत्याधिक है और इसी लिए बड़े शहर लोगो के आकर्षण का केन्द्र है।

③ राजनीतिक कारक - राज्य विस्तार की इच्छा, उपनिवेश नीति, राज्य की नीतियाँ इत्यादि भी प्रवास की धारा को प्रभावित करती है।

तुर्क, अफगानो लोगो के द्वारा राज्य विस्तार किया जाता था।

④ सांस्कृतिक कारक - सामाजिक प्रथाये, मान्यताये एवं धार्मिक संकट आदि प्रवास को प्रभावित या नियंत्रित करते है। जैसे-भारत मे महिलाओ का प्रवास मुख्यत: विवाह के कारण होता है, विकासशील देशो मे निम्न स्तर के लोगो मे गतिशीलता अधिक है क्योंकि उनके पास स्थायी संपत्तियो की कमी है।, धार्मिक संकट एवं धर्म के नाम पर

⑤ लोगो पर अत्याचार, यह भी लोगो के प्रवास को प्रभावित करता है जैसे भूतकाल मे यहूदीयो का प्रवास (मेसोपोटामिया), रोहिंग्यो (Rakhin) का प्रवास, कश्मीरीयाँ (पंडित) का प्रवास,

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की महत्वपूर्ण घटनाये :

सबसे पहले आयरलैण्ड, फ्रांस से आया था

कोलम्बिया - ईकाज

U.S.A - Red Indian / Native America

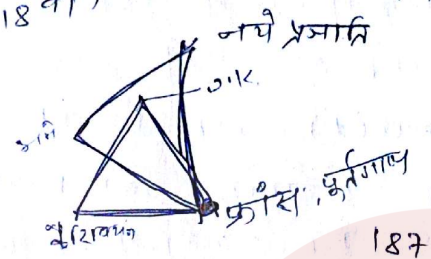

आयरलैण्ड ↓ आस्ट्रेलिया लोग

ईसाई → कैथोलिक → प्रोटेस्टेंट

दास प्रथा

→ Mestizo

→ Mulatto

→ Mamlo

(14-18 वी)

1873 - दास प्रथा पर प्रतिबंध

(14-18 वी)

→ मानव की उत्पत्ति संभवतः मध्य एशिया या अफ्रीका मे हुई वहाँ से आदि मानवो का विश्व मे प्रवास हुआ परन्तु इस तरह के प्रवास को प्रसार (Diffusion) के तौर पर वर्गीकृत किया जाता है क्योंकि यह संचरन (Moment) प्रवास के मुकाबले धीरे होता है।

⇒ यूरोपियन प्रवास (14-18 वी) → 4-5 शताब्दी

पूर्व प्रवास चालू हुआ जिसमे यूरोपियन जातियो का उत्प्रवास हुआ था और यह प्रवास पश्चिम की तरफ था इस तरह के प्रवास से स्थानीय लोगो का स्थानापन्न हुआ और उनकी सभ्यता का उन्मूलन हो गया इस तरह का प्रवास नये विश्व की खोज तथा उसी समय सामुद्रिक प्रतिस्पर्धा की वजह से संभव हो सका जहाँ राज्यो ने इस तरह के प्रवास को प्रोत्साहित किया इस प्रवास की धारा से कई नकारात्मक प्रभाव हुये। और

GENERAL STUDIES HINDI

उत्तरी अमेरिका और लैटिन अमेरिका मे कई जातियों का विनाश हो गया उदाहरण स्वरूप स्थानीय अमेरिकन जनसंख्या जो पहले 100 million के आस पास थी वो प्रवास के वर्षों मे 8 million ही रह गयी, कोलम्बिया की ईकाज जनजातियाँ सोलहवी (16वी) शताब्दी मे बहुत ही ज्यादा संकुचित हो गयी और वही कनाडा में इनुत (Inuit) जो 15वी शताब्दी मे 2 million के आसपास थे 19वी शताब्दी मे इनकी संख्या मात्र 5 लाख रह गयी,

⇒ सांस्कृतिक प्रभाव - यूरोपियन प्रवास की वजह से सांस्कृतिक समायोजन (cultural intermixing) की वजह से कई मिश्रित जातियो की उत्पत्ति हुई जिनमे मेस्टिजो (इंग्लिश + स्थानीय अमेरिकन), मुलाटोस (इंग्लिश + अफ्रीकन), जेम्बो (अफ्रिकन + स्थानीय अमेरिकन)

⇒ अफ्रीका का प्रवास -

Slave trade (दास प्रथा)

18वी शताब्दी ~~[illegible]~~ से पहले यूरोपियन प्रवास पश्चिम की ओर हुआ और यह प्रवास अपने आप दास प्रथा जैसी कुप्रथा लेकर आया जिसमे आफ्रीका से दासो को लैटिन अमेरिका और कैरेबियन द्वीप समूहो मे बेचा जाता था जहाँ से उनके बदले रबड़ और चीनी की आपूर्ति यूरोप मे की जाती थी और यूरोप से पक्का माल अफ्रीका मे बेचा जाता था और उस विक्रय के बदले दासो की खरीद - बिक्री की जाती थी।

(फ़ोटोस्टेट)

Indentured Labour
- अनुबंध

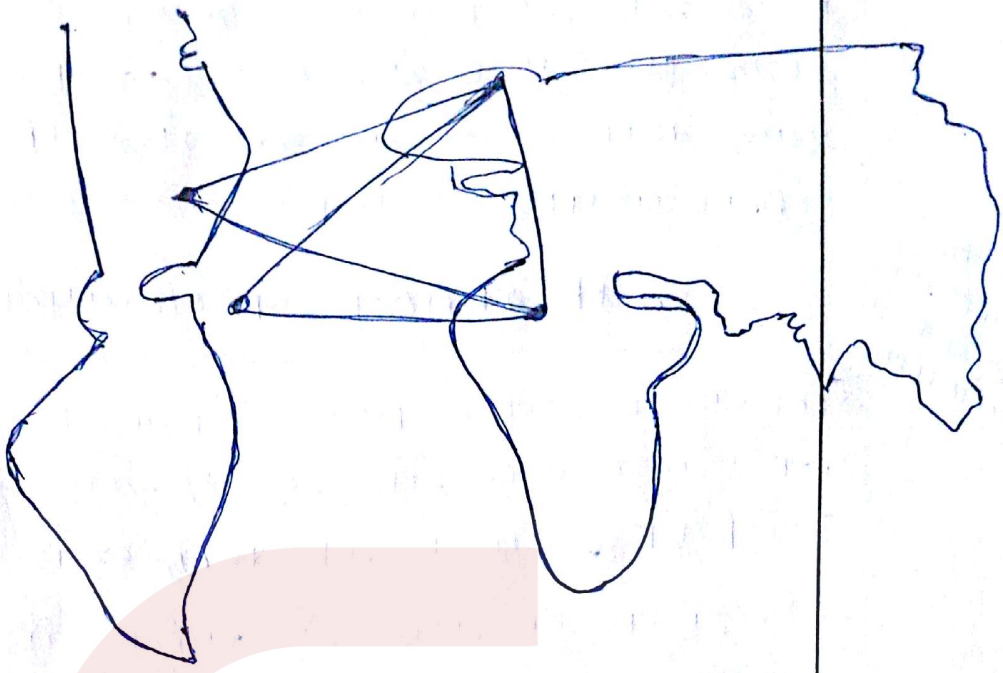

→ 18वीं शताब्दी के बाद यूरोपीयन का विस्तार पूर्व की तरफ हुआ। अब स्वेज नहर की वजह से पूर्व में गमन आसान हो गया और यूरोपियन लोगों का संचरन दक्षिण अफ्रीका, **दक्षिणी-पूर्वी** एशिया, आस्ट्रेलिया के तटीय क्षेत्रों की तरफ हुआ। यह प्रवास यूरोप में होने वाली औद्योगिक क्रांति के समकालिन था तथा इन नये क्षेत्रों में खनन करने, **कृषि** उत्पादन करने इत्यादि के लिए उन्होंने दास प्रथा की समाप्ती के बाद बंधुआ मजदूरी का **सृजन** किया जिसमें एशियाई मूल के लोगों का प्रवास हुआ यह प्रवास स्वैच्छिक था और मुख्यतः यह दक्षिणी पूर्वी एशिया, **अफ्रीका** और ऑस्ट्रेलिया की तरफ था

गुजराती लोग - अफ्रीका, तंजानिया

बिहार, U.P - द० पूर्व एशिया, प्रशांत

→ → 20वीं शताब्दी में प्रवास - 20वीं शताब्दी के ~~स्वतन्त्र~~ में जो प्रवास हुआ वो **मुख्यतः पहले** पूर्वार्द्ध

के प्रवासो से विभिन्न था इसमे राजनीतिक कारक महत्वपूर्ण थे जबकि 20 वी शताब्दी के पूर्वार्द्ध तथा 21 वी शताब्दी मे आर्थिक कारक अधिक प्रभावित हुआ।

→ हिटलर यहुदीयो को खत्म करना चाहता था

20वी शताब्दी का महत्वपूर्ण प्रवास

→ हिटलर के समय 1933 से 1943 के बीच यहुदीयो का प्रवास हुआ और यह मुख्यतः युरोप, अमेरिका, जर्मन की तरफ हुआ

→ ईजराइल की वजह से जर्मन और अरब लोगो का प्रवास हुआ।

→ 1947 मे भारत पाकिस्तान बटवारा के वजह से एक ही बार मे 65 million लोगो का प्रवास हुआ।

→ U.S.S.R का प्रवास और विघटन - U.S.S.R के विघटन से स्लाव जनसंख्या का प्रवास पुनः उनके स्थानीय क्षेत्रो की तरफ हुआ इसे अल्पावा U.S.S.R के विघटन और युरोपीय यूनियन (E.U) के स्थायीत्व के कारण भी बहुत से जनसंख्या पूर्व से पश्चिम की तरह प्रवासित हुई जर्मनी के एकीकरण (1990) के बाद बहुत से लोगो पूर्व जर्मनी से पश्चिम जर्मनी की तरफ प्रवासित हुई।

(स्लाव)

⇒ अफ्रीका का प्रवास - यह मुख्यतः चार क्षेत्रो मे हुआ है अंगोला और रवाडा मे, साहेल क्षेत्र मे जो सुखा प्रभावित क्षेत्र है जो दुर्भिक्ष या अकाल सामान्य है, दक्षिण अफ्रीका के लोगो का Apartheid (अपारथाईड) कार्यकाल

GENERAL STUDIES HINDI

मे प्रवास और वितरण। तथा अपारथाईड के विघटन के बाद दक्षिण अफ्रीका से यूरोपियन लोगों का प्रवास , कांगो जहाँ जनजातियाँ संसाधनों के लिए लड़ती झगड़ती रहती हैं।

~~२०वी शताब्दी मे प्रवास~~ -

भारत और चीन -

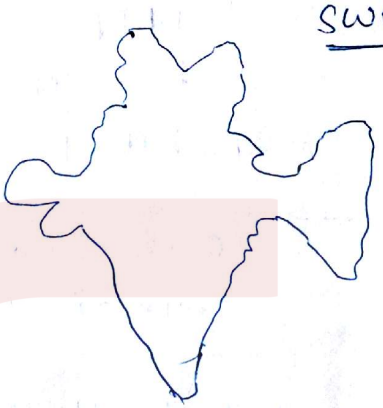

SWF - Sovereign (सम्प्रभुता) wealth fund

अलवर जिला निमराणा - जापानी project लगा रहा है।

→ भारत से 1960 मे तथा उसके बाद सेवा के क्षेत्र मे प्रवास अधिक हुआ है इसमे मुख्यतः डॉक्टर, नर्से शामिल है जो यूरोप की तरफ प्रवासित हुए हैं जबकि इंजिनियर्स का प्रवास अमेरिका की तरफ हुआ है। 1980 के बाद computer क्रांति के कारण software engineers का प्रवास U.S की तरफ अधिक हुआ है। उसके बाद उच्च शिक्षा के लिए कनाडा और आस्ट्रेलिया भी प्रवास के गंतव्य स्थान बनके उभरे हैं हालांकि हरित क्रांति के बाद पंजाबी लोगों का उत्प्रवास टोरंटो और मॉन्ट्रियाल की तरफ हुआ था और यह धारा अभी भी बनी हुई है।

GENERAL STUDIES HINDI

२१वी शताब्दी मे प्रवास

- → ईरान- इराक से शरणार्थियों का प्रवास
- → spring revolution/orange revolution (लिबिया मे हुआ था) के बाद उत्तरी अफ्रीका से यूरोप की तरफ [2011-12] गद्दाफी मारा गया था.
- → सीरिया से जर्मनी (यूरोप)
- → यमन से यूरोप
- → (कुर्द) लोगों का पश्चिम की तरफ प्रवास — टर्की और ईरान Border.

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

→ रोहिंग्या का भारत (Assam) में प्रवास
→ चकमा शरणार्थी का भारत की तरफ
→ जलवायु शरणार्थियों के प्रवास ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, USA, यूरोप की तरफ

HDR

Human development Report, 2009

मानविय विकास सूच

Over comming barriers

बाधाओं पर विजय

→ UN Report जो 2009 में प्रकाशित हुई थी वो प्रवास पर आधारित और उस Report का टाइटल था over coming barriers, इस Report के अनुसार हमारा विश्व असमान है और बहुत से लोगो के लिए जो विकासील देशो मे रहते हैं जो जीवन की गुणवत्ता सुधार के लिए प्रवास ही एक विकल्प है बहुत से लोगो के लिए प्रवास जीवन जीने का (survival) एक मुददा है।

→ मानव विचरण का महत्व आर्थिक स्तर को बेहतर करना ही नही बल्कि कहाँ रहे इसका निर्णय करने की क्षमता मे भी है जो मानवीय स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण चाबी है।

→ इसलिए सरकारो को प्रवास से प्रतिबंध हटाना चाहिए ताकि लोगो के विकल्प तथा स्वतंत्रता को बढाया जाय

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

→ HDR Report 2009 तथा International organisation on migration (IOM) (Dec में आयोजन) इसको लिख लेना है) के अनुसार प्रवास सबसे ज्यादा विकासशील से विकसित की तरफ नही बल्कि विकासशील से विकासशील की तरफ, तथा विकसित से विकसित की तरफ ज्यादा है।

→ अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की बजाय ~~अंतरदेशीय~~ प्रवास अधिक है विश्व मे करीब 740 million आंतरिक प्रवासी है जबकि अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी इससे 4 गुना कम है।

→ अंतर्राष्ट्रीय प्रवास मे भी ज्यादातर प्रवास शरणार्थियो का है जो करीब 20-40% है और इन्हे U.N.C.H.R (commission on Human Right) मानवाधिकारो ~~पर~~ U.N कमीशन) ने "people of concern" की संज्ञा दी।

(Q) विश्व मे वर्तमान मे होने वाले प्रवास की धारा को स्पष्ट कीजिए। [150 w, 10M]

प्रवास के प्रभाव

→ आर्थिक
→ नागरिकरण।
→ पर्यावरणीय
→ राजनीतिक
→ सामाजिक व सांस्कृतिक
→ जनतांकिकी / जनसांख्यिकी

→ प्रवास मुख्यतः लोगो के आर्थिक जीवन स्तर की गुणवत्ता को बढ़ाता है इसके साथ - साथ प्रवास गंतव्य स्थान तथा उत्प्रवासी क्षेत्रो ~~का~~

GENERAL STUDIES HINDI

की जनांकिकी तथा सामाजिक और सांस्कृतिक विचारों को भी प्रभावित करता है यह कुछ नकारात्मक प्रभाव जैसे जेनोफोबिया (Xenophobia) की भी उत्पत्ति हो सकती है प्रवास के प्रभावों को हम निम्नलिखित चार भागो में वर्गीकृत कर सकते है।-

(I) आर्थिक प्रभाव - प्रवासी लोग आकर्षण और प्रतिकर्षण बलों के कारण उस क्षेत्रों की तरफ प्रवास करते है जहाँ उनके जीवन स्तर की गुणवत्ता मे विकास होगा तथा जहाँ रोजगार के साधन उपलब्ध होगे ये लोग गंतव्य स्थानो से अपने देश मे परिवारो को प्रेषण (Remittances) भेजते हैं जिसकी वजह से न केवल गंतव्य स्थानो बल्कि स्त्रोत क्षेत्रो मे भी आर्थिक विकास होता है।

'CHC custom Hairy center.

यही पर 1947 के पंजाबी नस्ल को यही बसाया गया था।

→ पिछड़े तथा नये क्षेत्रो मे तकनीक रूप से विकसित नये समुदायो को पहुँचने पर उस क्षेत्र के संसाधनो का विदोहन चालू होता है तथा यह क्षेत्र तीव्र गति से आर्थिक विकास की तरफ आकर्षित होता है उदाहरणत न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया का विकास प्रवासी यूरोपीयन की वजह से हो सका है।

→ प्रवास व्यक्ति की गुणवत्ता स्तर बढ़ाने के साथ साथ उस सम्पूर्ण क्षेत्र के विकास मे भी सहायक होता है तथा उत्प्रवास वाले क्षेत्रो मे शिक्षा का स्तर बढता है महिलाओ का सशक्तिकरण होता है तथा अन्य विकास की सुविधायें उपलब्ध होती है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है केरल.

(II) जनसांख्यिकी प्रभाव - गंतव्य (distination) स्त्रोत (origin)

	गंतव्य	स्त्रोत
Birth Rate	↑	↓
death Rate	↓	↑
Senile (वृद्ध)	↓	↑
युवा	↑	↓
निर्भरता	↓	↑
Sex Ratio	↓	↑

(iii) राजनीतिक प्रभाव - (KKK)

Ku Klax Klan – सफेद लोगो का अमेरिकी ग्रुप जो काले का विरोध करता है।

- प्रवास की वजह से गंतव्य स्थान के लोग रोजगार तथा अन्य संसाधनों को उनसे छिनने की मनोवृत्ति से ग्रसित होकर प्रवासियो का विरोध करते है तथा इसके नाम पर राजनीतिक हिंसाओ का भी जन्म होता है तथा कई राजनीतिक समूहन भी बनते है जैसे- USA मे Ku (कु) Klax (क्लास) (Klan) (क्लान) और भारत मे इसको हम महाराष्ट्र मे हुये आंदोलनो से समझ सकते है।

→ प्रवासी समुदाय सामान्यतः अपने मूल देश से भी संबंध बनाये रखता है और यह दोनो देशो के व्यापारिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक संबंधो को प्रगाढ करने मे सहायक होता है उदाहरण के तौर पर यहूदियो का इजराईल के पक्ष मे अमेरिकन विदेश नीति पर प्रभाव

(iv) सामाजिक - सांस्कृतिक प्रभाव - जनसंख्या के प्रवास से संबंधित देशो / राज्यो / क्षेत्रो / जिलो से संबंधित संस्कृति, भाषा, तकनीक इत्यादि के आदान - प्रदान से उनके बीच परस्पारिक मित्रता सहानुभूति और सहयोग की भावना मे वृद्धि होता है इसका इसका प्रभाव स्त्रोत स्थानो पर गंतव्य स्थानो की विचार धारा और मनोवृत्ति के परिवर्तन से भी समझा जा सकता है जहाँ लोग आधुनिक विचारधाराओ से प्रभावित होकर अपने मूल क्षेत्रो मे उन विचारो को प्रादुभावित करते है उदाहरणत भारतीय समाज मे राजा राम मोहन राय, सैय्यद अहमद खाँ, जवाहरलाल नेहरु इत्यादि के योगदान से भी समझा जा सकता है।

प्रवास के सिद्धांत

→ मनुष्य के व्यवहार मे अनिश्चितता के कारण प्रवास के लिए किसी निश्चित सिद्धांत की व्याख्या करना बहुत कठीन कार्य है क्योंकि मानव का व्यवहार के अनुमान लगाना मुश्किल है इसके साथ ही जनसंख्या एक गतिशील तत्व है जो देश काल के अनुसार परिवर्तित होती रहती है फिर भी 1950 की मात्रात्मक क्रांति (Quantitative Revolution) के दशक मे भूगोल कर्त्ताओ ने इस संदर्भ सिद्धांतो, नियमो तथा मॉडल की रचना की।

कुछ मुख्य सिद्धांत :

(1.) रैवन्सटीन का प्रवास सिद्धांत :

- रैवन्सटीन के प्रवास का नियम (काउन्टी स्तर पर) ग्रेट ब्रिटेन में काउन्टी स्तर पर (जिला स्तर पर) होने वाले प्रवासों के अनुभव के आधार पर प्रवास के नियमों का प्रतिपादन किया रैवन्सटीन के प्रतिपादित सिद्धांत निम्नलिखित है। (7 सिद्धांत)

(1) • प्रवास और दूरी का सिद्धांत - अधिकांश प्रवासी लघु दूरी तक संचरण करते हैं फलतः जनसंख्या में स्थानीय परिवर्तन व्यापक घटना है तथा यह प्रवास धारा को जन्म देती है जो वृहद व्यापारिक और औद्योगिक केन्द्रों की तरफ अग्रसर होती है यह नियम दो प्रकार से क्रियाशील होता है।

(I) दूरी क्षय का नियम (distance decay) - दूरी बढ़ने के साथ-साथ प्रवास की मात्रा घटती है।

(II) लम्बी दूरीयों के प्रवासीयों में वृहद व्यापारिक एवं औद्योगिक नगरों को वरीयता दी जाती है।

(2) • पदानुक्रम (Migration in phases) - तीव्र गति से बढ़ते हुए नगर में उसके आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों में जो रिक्तियाँ उत्पन्न होती हैं उनको पूर्ण करने के लिए अपेक्षाकृत दूरस्थ क्षेत्रों से प्रवासी आते हैं यह तब तक होता है जब तक किसी बड़े नगर का प्रभाव कई चरणों से होता हुआ दूरस्थ तक नहीं पहुँच जाता।

NCT
अलवर, मथुरा, जयपुर
National Capital Territory

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

(3) स्त्रीयो की बहुलता लघु दूरी मे अधिक होती है।

(4) **ग्राम नगरीय विभेदन** - नगरीय क्षेत्रो के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्रो मे प्रवास की भावना अधिक होती है क्योंकि शहरी क्षेत्रो मे आर्थिक विकल्प ज्यादा होते हैं।

(5) **धारा - प्रतिधारा** | DRIFT & COUNTER DRIFT - प्रवास के मुख्य धारा क्षतिपूर्ति हेतु प्रतिधारा को उत्पन्न करती है।

(6) **प्रौद्योगिकी विकास और प्रवास** - प्रौद्योगिकी विकास के साथ प्रवास की मात्रा भी बढ़ती है।

छवी राजपूत प्रजापती राजा का Lead.

(7) प्रवास आर्थिक / अनार्थिक गतिविधियो से प्रभावित होता है परन्तु आर्थिक प्रक्रियाऐ प्रवास के लिए सर्वोपरि है।

गुरुत्व मॉडल
GRAVITY MODEL

$$= \frac{G M_1 M_2}{R_2}$$

K = Constant

P_1 - स्त्रोत स्थान की जनसंख्या

P_2 - गंतव्य स्थान की जनसंख्या

d - दूरी

$$\text{(M) प्रवास सूचकांक} = \frac{K P_1 P_2}{d_2}$$

- इस मॉडल का मौलिक आधार यह है कि किसी क्षेत्र या नगर मे प्रवासियो को आकर्षित करने की शक्ति उसके आकार के अनुसार बढ़ती जाती है और दूरी के वर्ग के अनुसार घटती जाती है।

GENERAL STUDIES HINDI

→ सर्वप्रथम W. J. Reilly (डब्लू जे० रेली) ने नगर के फुटकर व्यापार गुरुत्वाकर्षण नियम (Law of Retail gravitation) के नाम से इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

विश्लेषण – प्रवास सामाजिक और जटिल विषय है जिसकी गणितीय सूत्र के आधार पर व्याख्या करना कठिन और असम्भावित है

→ प्रवास सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से भी निर्धारित होता है जिसे इस मॉडल ने ध्यान में नहीं लिया।

→ यह मॉडल प्रवासियों के लिंग, आयु प्रोफाइल की भी अवहेलना करता है।

→ प्रवास न केवल दोनों शहरों के आकर्षण और प्रतिकर्षण बलों बल्कि उनके बीच उपस्थित अवसरों से भी प्रभावित होता है।

न्यूनतम प्रयास मॉडल
PRINCIPLE OF LEAST EFFORT MODEL

→ यह सिद्धांत गुरुत्व मॉडल का ही एक रूप है जिसमें यह माना गया है कि विभिन्न समुदायों का परस्परिक प्रवास इस प्रकार होता है कि सम्पूर्ण तंत्र को न्यूनतम प्रयास करना पड़े. इसका प्रतिपादन G.K. ZIPF (जिफ) ने किया

$$M = \frac{kP_1P_2}{d}$$

इसके अनुसार दूरी जितनी अधिक होगी प्रयास उतना अधिक करना होगा अतः संभवतः मनुष्य न्यूनतम प्रयास से ही किसी

अभिप्ट (पाने की इच्छा) को प्राप्त करना चाहता है यह मॉडल अमेरिका मे सार्थक है परन्तु इसमे भी वो ही त्रुटियाँ/कमीयाँ है जो गुरुत्व मॉडल मे था।

अंतराभी / मध्यवर्ती अवसर मॉडल

LAW OF INTERVENING OPPORTUNITY

(स्टोफर)

→ प्रवास वास्तविक दूरी की अपेक्षा सामाजिक तथा आर्थिक दूरी से अधिक प्रभावित होता है दो स्थानों के मध्य पायी जाने वाली सुविधाये प्रवास की मात्रा को कम करती है और प्रवास मे अवरोध उत्पन्न करती है

$$\text{प्रवास सुचकांक } (Y) = K \frac{\Delta X}{X}$$

ΔX – गंतव्य पर उपलब्ध अवसर

X – मूल और गंतव्य के बीच अवसर

– यह मॉडल पाश्चात्य और विकसित देशो के लिए अधिक उपयोगी है क्योंकि वहाँ सूचनाये आसानी से तथा व्यापक तौर पर उपलब्ध है जिसके आधार पर व्यक्ति प्रवास का स्वतंत्र निर्णय ले सकता है।

प्रतियोगी प्रवास मॉडल

COMPETITING MIGRANTS MODEL

→ यह मॉडल स्टोफर ने अपने प्रथम मध्यवर्ती

अवसर मॉडल को संशोधित करते हुए दिया जिसमे संक्रियात्मक (operational) गतिशीलता का अभाव था तथा इसमे प्रतियोगी प्रवासियो की प्रतिस्पर्धा को भी समाहित किया।

$$Y_{AB} = \frac{X_1 X_b}{X_c X_{AB}}$$

X_1 = यह कुल उत्प्रवासियो की संख्या है।

X_b = b मे उपलब्ध कुल अवसर

X_{AB} = A और B के बीच उपलब्ध मध्यवर्ती सुविधाएँ

X_c = प्रतियोगी प्रवासी

(0) जनसंख्या प्रवसन पर 'थ्योरीयो (सिद्दांतो) का समालोचनात्मक परिक्षण कीजिए [UPSC-2015]

सोपानी संचरण मॉडल

STEP WISE MOVEMENT MODEL

सोपान महोदय ने दिया था।

→ किसी तीव्र वृद्दि वाले नगर के लिए उसके समीपवर्ती क्षेत्र की जनसंख्या ही प्रवास करती है। प्रवास के कारण उत्पन्न रिक्तियों की पूर्ति अपेक्षाकृत अधिक दूरवर्ती जनपदो या गॉवो से होती है यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक उस नगर की आकर्षण शक्ति का अनुभव कई चरणो से होता हुआ कृषि फार्मो या खेतिहर गॉवो मे भी न किया जा सके।

GENERAL STUDIES HINDI

Site of FACTORY

व्यवहारपरक मॉडल / BEHAIVER MODEL

→ जुलियन वल्पर्ट के अनुसार मात्रात्मक आधार पर जो संरचनात्मक मॉडल विकसित किये गये हैं वो वस्तुतः यांत्रिक हैं। जिसमे मनुष्य की इच्छा, आवश्यकता, दृष्टिकोण पर ध्यान ही नही दिया गया है। उसके अनुसार प्रवास प्रतिरूप (Migration Pattern) मनुष्य की अभिरुचि आवश्यकता तथा दृष्टिकोण का परिणाम है।

→ Cogs in the wheels. (साईकिल का स्कोप)

→ प्रत्येक व्यक्ति अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अपने निवास स्थान तथा गंतव्य स्थान के मूल्य का आकलन करता है और स्थान की उपयोगिता के आधार पर अपने कार्य क्षेत्र को निर्धारित करता है वे सभी स्थान प्रवास के संभावित स्थल होगे जहाँ व्यक्ति विशेष निवास स्थान की तुलना मे उपयोगिता अधिक होगी।

→ विभिन्न व्यक्तियो का क्रिया क्षेत्र अलग-अलग होता है जो समय अनुसार गतिशील और परिवर्तनशील है स्थान की उपयोगिता को ध्यान मे रख कर जहाँ मनुष्य को सामाजिक, आर्थिक पता संस्थागत अवरोधो का सामना करना पड़ता है उसका मूल्यांकन करके ही मनुष्य प्रवास करता है।

प्रश्न संख्या (Question No.)

paper को map बनाने में 1 sec लगना चाहिए।

U.P.S.C. (PAPER-2)

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

INDIAN MIGRATION
भारत में प्रवास

- 45 crore migration India में हुआ है। 2011 जनगणना के अनुसार

- आंतरिक (internal)
  - अंतरराज्यीय (Inter state)
  - अंतर्राज्यीय (Intrastate)
- अंतर्राष्ट्रीय International — 10 लाख लोग (इसमें)
  - international migration report — 16 million

उत्प्रवास out migration

Pre Independence

बंधुआ मजदूर (पूर्व स्वतंत्रता) — पूर्वी अफ्रीका, द० पू० एशिया, आस्ट्रेलिया, माइक्रोनेशिया

Post Independence

- (1960-70)
  - हरित क्रांति → कनाडा
  - डॉक्टर, नर्स → UK, यूरोप
- (1980-90)
  - oil boom → खाड़ी देशों (केरल से विशिष्ट धर्म के लोग)
  - IT boom → USA
- (वर्तमान) → ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, जापान, अफ्रीका

प्रवास immigration

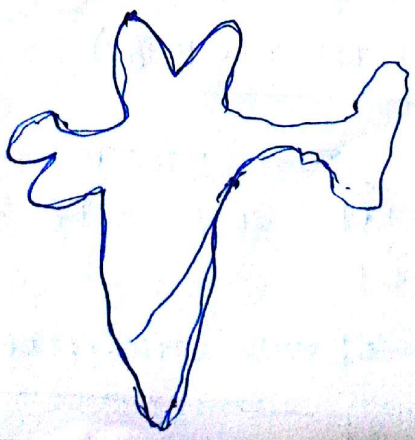

1. नेपाल (Illegal) — up / Bihar
2. बांग्लादेश — असम / प० बंगाल
3. रोहिंग्यो — शरणार्थी (Assam)
4. श्री लंका — तमिलनाडु
5. तिब्बत — शरणार्थी हिमाचल प्रदेश (धर्मशाला)

GENERAL STUDIES HINDI

→ भारत मे अप्रवासी मुख्यतः एशियाई देशो से आ रहे है और उसके बाद अफ्रीका और यूरोप

भारत मे आंतरिक प्रवाह पर कुछ तथ्य (data)

→ भारत पारम्परिक तौर पर असंचरनशील देश माना जाता था। डेविस और स्केल्डन के अनुसार भारत मे यूरोप और उत्तरी अमेरिका के मुकाबले बहुत ही कम है अगर हम 1931 के जनसंख्या डॉटा का विश्लेषण करे तो भारत मे केवल 3.6% नागरिक ही अपने स्थानीय राज्य से बाहर दूसरे राज्य मे रहते है जबकि U.S.A मे यह प्रतिशत 30% था।

→ अगर हम प्रतिशत अनुपात की बात करे तो भारत मे कुल प्रवास बढ़ा नही है 1971 - 31.7% था, 2001 मे करीब 30% जबकि 2011 मे 37%!

इसका कारण असमान विकास और क्षेत्रीय तौर पर विद्यमान असमानताएँ है और 1990 के LPG सुधारो के बाद यह प्रवास मुख्यतः भारत TIER-I, TIER-II शहरो की तरफ प्रवासित है। (भारत मे 6 भाग TIER है)

→ भारत मे श्रमिको का प्रवास मुख्यतः चक्रीय है (CIRCULAR) और इसकी पुष्टि 2017 का आर्थिक सर्वेक्षण भी करता है।

→ भारत मे जनसंख्या की कम गतिशीलता के कारक

भारत में जनसंख्या की कम गतिशीलता के कारण :

I. पारिवारिक संरचना –
II. कृषि पर आधारित संस्कृति
III. जाति एवं वर्ण व्यवस्था तथा क्षेत्रीय और सामुदायिक पूर्वाग्रह
IV. जल्दी विवाह (Early Marriage)
V. भाषा और संस्कृति की विविधता [Intrastate के तुलना में Interstate 1/4% है प्रवास]
VI. अशिक्षा
VII. सूचनाओं की कमी (Information deficit)

भारत में प्रवास का भौगोलिक स्वरूप – SPATIAL PATTERN

→ 2001 – में 14% रोजगार के प्रवास 2011 के अनुसार घट गया है।

→ भारत में प्रवास मुख्यतः शादीयो के कारण होता है और करीब 50% भाग शादीयो के कारण प्रवासित हो रहे हैं। (70% महिलायें)

- → रोजगार
- → शादी
- → शिक्षा
- → जन्म के समय संचरन / प्रवास
- → परिवार के साथ संचरन / प्रवास
- → अन्य

→ भारत में UP और बिहार उत्प्रवासी (Out migrants) क्षेत्र हैं और ये राज्य करीब 70% योगदान देते हैं अंतर्राज्यीय (Inter State) में।

→ गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा भारत मे अप्रवासी राज्य और (Immigrants) इसमे महाराष्ट्र मे 40% से भी ज्यादा लोग प्रवास करते है।

→ आर्थिक सर्वेक्षण, 2017 के अनुसार प्रवास के नये कोरीडोर बन रहे है और महाराष्ट्र मे अप्रवासी कम हो रहे है जबकि दक्षिणी राज्य नये गंतव्य राज्य बन कर उभर रहे है इसमे केरल और तमिलनाडु मे प्रमुख है।

- बिहार (U.P) के लोग सबसे अधिक - मुम्बई
- उड़ीसा ———— - गुजरात
- झारखण्ड ———— कोलकत्ता

→ शहरी जिलो जैसे- गुरुग्राम, मुम्बई, नोएडा, जैसे जिलो मे अप्रवास हो रहा है और U.P और BIHAR मे अधिकतम उत्प्रवासी जिले है। और भारत मे उत्प्रवासी जिलो की संख्या तथा इनका वितरण बढ़ता जा रहा है।

→ भारत मे अधिकतम अंतर्राज्यीय प्रवास के राज्यो मे होता है और परन्तु इसके दो अपवाद है। U.P से ज्यादातर लोग महाराष्ट्र को वरीयता देते है जबकि उड़ीसा से लोग गुजरात की तरफ प्रवासीत होते है।

→ दक्षिण मे महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यो को वरीयता दी जाती है जबकि आंध्र प्रदेश जहाँ सूखा प्रभावित क्षेत्र है तथा केरल जहाँ शिक्षित युवाओ के लिए आर्थिक अवसर उपलब्ध नही है वहाँ से उत्प्रवास हो रहा है। परन्तु 2017 के (सर्वे के अनुसार)

आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार केरल भी अप्रवासी क्षेत्र बनकर उभर रहा है।

→ भारत मे अंतर्राज्यीय (intrastate) प्रवास अंतर राज्यीय प्रवास (Interstate) के मुकाबले 4 गुना ज्यादा है।

जनसांख्यिकी (demography) के अनुसार प्रवास

→ भारत मे ग्रामीण से ग्रामीण क्षेत्र मे महिलाओं का प्रवास ज्यादा है और 2011 जनगणना के अनुसार महिलाओं का प्रवास 2001 के मुकाबले बढा है और यह वृद्धि पुरुषो के प्रवास की अपेक्षा ज्यादा है।

→ भारत मे 20-29 आयु के लोगो मे 2011 की जनगणना के अनुसार पुरुषो का प्रवास ज्यादा है इस आयु वर्ग मे 16 million लोगो ने प्रवास किया उसमे से 75% पुरुष हुये। (जिलो से) (G.S PAPER-I समाज मे)

→

भारत मे प्रवास की धारायें

R-R R-U U-U U-R	4 प्र

2015 UPSC G.S-I

(1) Rural - Rural — अन्य सभी प्रवास की धाराओं मे यह धारा प्रभावशाली है इसमे प्रवास मुख्यतः महिलाओं का होता है जो शादी के कारण प्रवाहित होती है इसके अलावा नये विकसित हुये क्षेत्रों मे ग्रामीण श्रमिकों का अप्रवास हो सकता है। जैसे- 1960 के दशक मे हरित क्रांति के फलस्वरूप

लोगो मे UP और बिहार से पंजाब की तरफ प्रवास किया इसके अलावा असम और बंगाल मे भी झारखण्ड, बिहार और उत्तर प्रदेश से काफी विकास के कारण लोग प्रवासित हुये। इस (Plantation Agriculture)

→ इसके अलावा सरकारी नीति जैसे तराई क्षेत्रो मे विभाजन के बाद सिख लोगो को बसाना, दंडकारण्या (उड़ीसा) तथा हाल ही मे नर्मदा विस्थापन के कारण। जो लोगो को बसाया गया है वो भी गाँव से गाँव की तरफ प्रवास ही है।

② Rural to URBAN –

Push:
→ अशिक्षा
→ जातिवाद
→ Economic opportunity
→ Infrastructure संरचना।

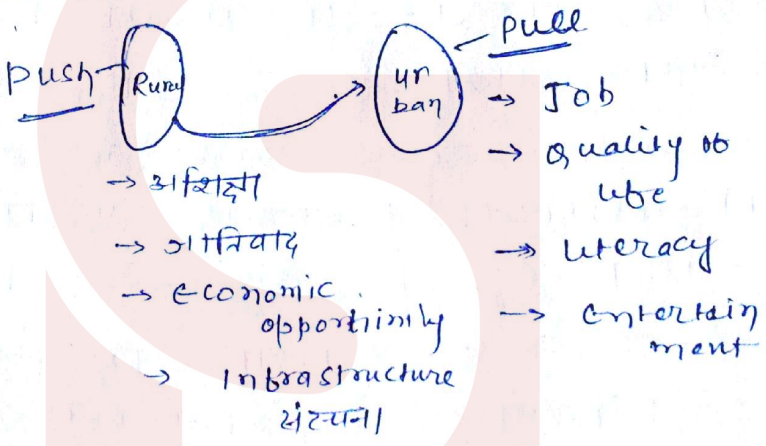

Pull:
→ Job
→ Quality of life
→ Literacy
→ Entertainment

→ पुरुषो की लम्बी और छोटी दूरी दोनो क्षेत्रो मे
→ अमीर और गरीब दोनो का प्रवास

→ भारत मे शहरो की जनसंख्या वृद्धि मे 23% योगदान है प्रवास का।

③ URBAN to URBAN –

– शहर से शहर के तरफ प्रवास मे मध्यमवर्ग के लोग ज्यादा प्रवासित होते है और यह प्रवास सोपानी मॉडल के अनुसार stages (पदानुक्रम) मे होता है।

(4) URBAN to RURAL – यह प्रवास शहरीकरण की उच्च अवस्था में होता है जब शहरों में प्रदूषण बहुत ज्यादा हो शहर रहने के लायक न हो तब लोग अच्छी आबो हवा के लिए गाँवो की तरफ तथा शहरो के बाहरी भागो की तरफ प्रवास करते है और इसमे मुख्यतः अमीर लोग उत्प्रवासित होते है।

(b) प्रवसन के कारणो एवं परिणामो को स्पष्ट कीजिए PAPER-II

(c) भारत मे अंतराप्रदेशिय प्रवसन के स्थानीय प्रारूप की विवेचना कीजिए तथा देश के प्रादेशिक विकास मे इसके निहतार्थ का परिक्षण कीजिए [15 M]

(d) उत्प्रवासन मे प्रवृत्तियो एवं उसके प्रमुख दबाव पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रीत करते हुए चर्चा कीजिए - PAPER-II [20]

GENERAL STUDIES HINDI

जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत

DEMOGRAPHIC TRANSITION THEORY

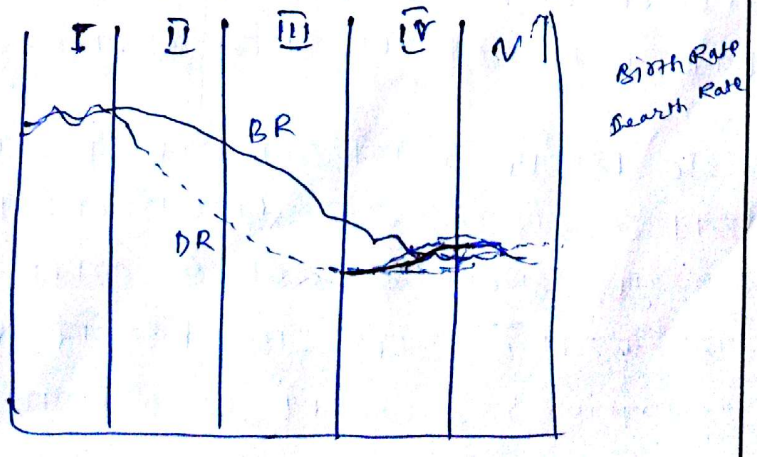

भारत का जन्म दर - 23

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

Determinism - (निराशावादी) / नियतिवाद
Possibilism - संभववाद
Probabilism -

→ जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत किसी भी देश में जनसंख्या विकास का सामान्य विश्लेषण प्रस्तुत करता है जो जन्म दर एवं मृत्यु दर के कालिक परिवर्तनों पर आधारित है।

→ यह सिद्धांत नोटेस्टीन द्वारा प्रतिपादित किया गया जिन्होंने पश्चिमी यूरोप के देशों के अनुभव के आधार पर जनसंख्या के कालिक वृद्धि के प्रतिरूप का जन्म दर और मृत्यु दर में सामान्यीकरण कर इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

(हाशिये पर: जनांकिकी संक्रमण सिद्धांत नोटेस्टीन ने दिया था पश्चिमी यूरोप के अनुभव के आधार पर)

→ यह सिद्धांत पाश्चात्य देशों की विगत 200 वर्षों से चली आ रही जन्म दर और मृत्यु दर में होने वाली परिवर्तन की प्रवृत्तियों पर आधारित है। यह सिद्धांत आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी विकास तथा जनसंख्या के विकास में संबंध स्थापित करता है और यह प्रतिपादित करता है कि आर्थिक विकास के साथ जनसंख्या विकास में भी परिवर्तन होता है।

(हाशिये पर: → यह सिद्धांत आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी विकास और जनसंख्या के विकास में संबंध स्थापित करता है)

→ यह सिद्धांत जनसंख्या विकास का विवरण प्रस्तुत करता है और इसके कारण क्या है तथा यह वृद्धि क्यों हो रही है इसका विश्लेषण नहीं करता है। अतः यह सिद्धांत विवरणात्मक (descriptive) है न की विश्लेषणात्मक (Analytical)

(हाशिये पर: → यह सिद्धांत विवरणात्मक प्रस्तुत करता है न कि विश्लेषणात्मक।)

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

जनांकिकीय (जनसंख्या) संक्रमण सिद्धांत की कुछ मान्यताएँ

BASIC ASSUMPTIONS

→ एक समयानुसार जनसंख्या वृद्धि को मृत्यु दर और जन्म दर के अंतर से समझा जा सकता है। इसमे एक समाज / समुदाय उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर की अवस्था से निम्न मृत्यु दर और निम्न जन्म दर की अवस्था को प्राप्त करता है।

→ यह सिद्धांत एक समुदाय उच्च जन्म एवं मृत्यु दर से वह निम्न जन्म एवं मृत्यु दर को प्राप्त करता है इसका विवरण देता है।

→ जन्म दर एवं मृत्यु दर के संक्रमण मे सबसे पहले मृत्यु दर में कमी आती है और उसके बाद जन्म दर भी कम होने लगती है।

→ सबसे पहले मृत्यु दर मे कमी आती है।

→ जनांकिकीय संक्रमण सामाजिक विकास के समानांतर प्रगति करता है और यह सामाजिक विकास सरकार के नियोजित हस्तक्षेप से नही बल्कि आर्थिक समृद्धी के कारण होता है ऐसा यूरोप ने अनुभव किया।

→ जनांकिकीय संक्रमण सामाजिक विकास के समानांतर प्रगति करता है।

→ जन्म दर और मृत्यु दर के संक्रमण को चार stage के द्वारा समझा जा सकता है।

जनांकिकीय संक्रमण की अवस्थाएँ

STAGES OF DEMO. TRA.

I Stage → (1) उच्च स्थायी अवस्था (Primitive High fluctuating stage) -

इस अवस्था मे जन्म दर और मृत्यु दर उच्च होती है तथा इन दोनो मे अंतराल कम होता है अतः जनसंख्या वृद्धि दर स्थायी

होगी इस अवस्था मे जन्म दर 35/1000 (35 व्यक्ति प्रति हजार) से भी अधिक होता है तथा यह लगभग स्थिर रहती है इस (सिद्धांत) अवस्था को हम माल्थस के सिद्धांत द्वारा समझा सकते है जहाँ भुखमरी अकाल इत्यादि के समस्या के कारण मृत्यु दर भी उच्च होती है।

→ यह मृत्यु दर घटती बढ़ती रहती है इसलिए जन्म दर और मृत्यु दर एक दूसरे के संदर्भ मे ऊपर निचे होते रहते है।

→ यह अवस्था कृषि समाज की विशेषता है जहाँ जनसंख्या घनत्व कम होता है और परिवार का आकार बड़ा होता है तथा लोग संयुक्त परिवार को वरीयता देते है।

→ कृषि समाज जहाँ घनत्व कम तथा आकार चौड़ा होता है।

→ कृषि सघन नही होती है और यह मुख्यतः जीविकोपार्जन के लिए की जाती है समाज मे चिकित्सा का अभाव होता है तथा इसमे द्वितीयक एवं तृतीयक व्यवसाय भी प्रारंभिक अवस्था मे होते है।

→ यह अवस्था औद्योगीकरण के पूर्व की अवस्था है तथा इसी के बाद समाज आधुनिकता की तरफ अग्रसर होता है।

→ इस अवस्था मे आयु लिंग पिरामीड (Age-sex-Pramid) का आधार चौड़ा होता है तथा इसकी ऊँचाई कम होती है।

wo po s.c
[PT 2012]

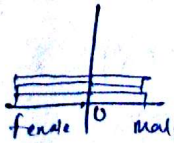

→ वर्तमान मे कोई भी देश इस अवस्था मे नही है।

II stage → प्रारंभिक वर्धमान अवस्था — EARLY EXPANDING PHASE

- इस अवस्था मे औद्योगीक क्रांति के कारण सामाजिक विकास तथा उसकी प्रगति होती है जिससे खाद्य समस्या का हल होता है, भूख और अकाल पर नियंत्रण संभव होता है जिससे जनसंख्या स्वस्थ और हस्ठ पुष्ठ होती है जिसके फलस्वरूप मृत्यु दर मे ह्रास होता है यह मृत्यु दर मे ह्रास आर्थिक विकास और उसके फलस्वरूप सामाजिक विकास और सामाजिक संवृद्धि के कारण होता है परन्तु चीन, भारत, तथा अन्य विकासील देशो मे मृत्यु दर का ह्रास सरकार की नीतियो के फलस्वरूप संभव हुआ है अतः यूरोप का अनुभव विकासील
1981-2001 देशो के लिए सामान्यीकृत (Generalized) नही किया जा सकता है।

→ IInd stage के बाद वाली अवस्था जनसंख्या विस्फोट की अवस्था है। जिसमे जन्म दर और मृत्यु दर मे अंतर ज्यादा होता है।

→ Age-sex Pyramid चौड़ाई (आधार की) ज्यादा और प्रथम अवस्था के मुकाबले ऊँचाई ज्यादा होगी

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

आयु संरचना — पैगोडिया — रूढ़िवादी
प्रोस्टेट — इंग्लैंड

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

III stage → उत्तर वर्द्धमान अवस्था — 18-19वीं शताब्दी
LATE EXPANDING STAGE

– औद्योगीक क्रांति के वजह से सामाजिक प्रगति होती है तथा सामाजिक संरचनाओ और मान्यताओ मे भी बदलाव आता है जिससे जन्म दर मे भी कमी होने लगती है यह खास औद्योगीक विकास के बाद उत्पन्न हुई नई सामाजिक संरचनाओ और आर्थिक एवं सामाजिक मजबूरी का परिणाम है जिसमे संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया। बिना संयुक्त परिवार की सहायता और जीवन की उच्च लागत की वजह से परिवार के लिए बड़े घर का गुजारा करना मुश्किल था इसके साथ ही इस अवस्था मे महिलाओ का सशक्तिकरण तथा सामाजिक चेतना की वजह से इन्हे पुर्नउत्पादन अधिकार (Reproductive Right), शिक्षा का अधिकार जैसे सामाजिक अधिकार मिलना चालू हुये और इस वजह से जन्म दर मे कमी देखी गई यह कमी प्राकृतिक एवं स्वभाविक प्रगति के परिणाम स्वरूप प्राप्त हुई न कि सरकार के नियोजन और नीतियो के वजह से जैसे कि विकाशील देशो मे अनुभव किया गया।

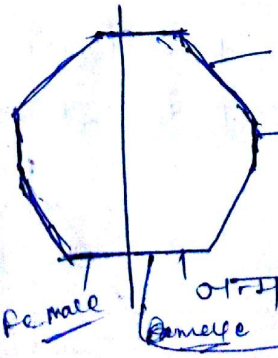

BARREL SHAPE

→ इसमें Pyramid shape Barrel आकार का होगा और यह पिरामिड Symmetric (सममित) होगा। जबकि विकासशील देशों में क्योंकि जन्म दर का ह्रास सामाजिक प्रगति के कारण नहीं बल्कि सरकार के हस्तक्षेप की वजह से हुआ है जहाँ महिलाओं को समाज में आज भी समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं तथा महिला भ्रूण हत्या जैसी कुरीतियाँ विद्यमान हैं इस कारण यह पिरामिड Asymmetric होता है। (सममितीय) ↓ (सुडौल)

→ भारत 2001 में जनांकिकी संक्रमण की ~~चतुर्थ~~ तीसरी अवस्था को प्राप्त कर चुका है।

(IV) stage → निम्न स्थायी अवस्था → low Fluctuating phase
LOW STATIONARY PHASE

→ इस अवस्था में जन्म दर और मृत्यु दर निम्न होती है तथा मृत्यु दर जन्म दर के मुकाबले अधिक स्थिर रहती है इस अवस्था में जनसंख्या लगभग स्थायी रहती है और वृद्धि दर लगभग रुक सी जाती है इस अवस्था में उच्च स्तर का सामाजिक विकास होता है जिसके कारण जीवन प्रत्याशा भी उच्च होती है तथा आयु लिंग पिरामिड उल्टा हो जाता है तथा यह पिरामिड महिलाओं के पक्ष में अपना स्वभाव उजागर करता है।

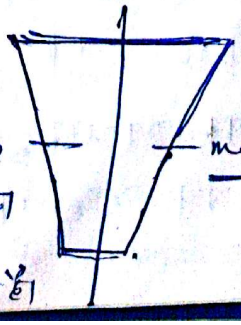

→ जापान, जर्मनी, रूस, U.S.A इत्यादि विकसित देश इस अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं।

GENERAL STUDIES HINDI

परन्तु कुछ विकसित देश। ऐसे है जिन्होने अपनी नीतियो के द्वारा जनसंख्या प्रवास को नियंत्रित किया है जिसके कारण वो देश निकट भविष्य मे चतुर्थ अवस्था को प्राप्त नही करेगे।

→ निर्भरता अधिक होगी अपक्रामक बीमारियाँ की बहुलता श्रमिको की कमी होगी।

जनांकिकीय संक्रमण का मूल्यांकन

सकारात्मक

→ मुख्यतः वैज्ञानिक सिद्धांत इसने यूरोप के २०० वर्षों के जनांकिकी संक्रमण का अनुभव के तौर पर अध्ययन किया और उसके आधार पर जनांकिकी संक्रमण की अवस्थाएँ बताये और इसको हम व्यवहारत आज भी सही पाते है।

→ (मानव) निष्पक्षता यह सिद्धांत आदिम कृषि मे संलग्न समाज से शहरी समाज के संक्रमण को सही तरह से आकलन करता है तथा उसी के साथ मानव विकास का भी सही आकलन करता है।

→ यह सिद्धांत भविष्य सूचक है जिसमे इसमे यूरोप मे होने वाले जनांकिकीय संक्रमण का सही आकलन करते हुए जन्म दर और मृत्यु दर मे सही संबंध स्थापित किया है और इसकी प्रेरणा से कई देश जनसंख्या नियंत्रण की नीतियो को अपना रहे है।

नकारात्मक,

→ इसकी पहली कमी (सिद्धांत) इस सिद्धांत की मान्यताएँ है जहाँ यह सिद्धांत कहता है कि

GENERAL STUDIES HINDI

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

1945 — Baby boom के बाद यूरोप मे 1950 - IV stage

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

जनांकिकी संक्रमण सामाजिक विकास का परिणाम है और वे दोनो समानांतर है परन्तु विकाशील देशो का अनुभव बताता है कि संक्रमण सामाजिक विकास का नही है अपितु सुनियोजित परिवार, नियोजन के कार्यक्रमो (Family Planning programme) तथा सरकार की नीतियों का परिणाम है।

लेकिन attack के बाद III अवस्था मे आ गया।

→ इसी के साथ विश्व मे कई देश ऐसे भी है जहाँ आर्थिक संक्रमण मे वो आगे बढ़ चुके है परन्तु सामाजिक विकास समानांतर नही हुआ है Ex - भारत मे पंजाब और हरियाणा

→ यूरोप मे मृत्यु दर मे ह्रास, कृषि विकास और उसके बाद वे औद्योगिक क्रांति का परिणाम था जिसके फलस्वरूप अकाल, भुखमरी पर काबू पा लिया गया परन्तु विकाशील देशो मे जन्म दर मे कमी और उच्च जीवन प्रत्याशा चिकित्सीय क्रांति का परिणाम है जिससे उच्च स्वास्थ सेवाओ, टीको का लाभ प्राप्त हुआ है।

→ जनांकिकी सिद्धांत नियतवादी सिद्धांत है और एक ही दिशा मे आगे बढता है और ये अवस्थाये क्रमानुसार आगे बढ़ती है परन्तु वास्तविकता मे बहुत सारे उदाहरण मौजूद है जहाँ जनांकिकी संक्रमण के इस नियम का अनुसरण नही होता है उदाहरण -

→ उदाहरणात II विश्व युद्ध के बाद U.S.A और U.K ने उच्च जन्म दर का एक दशक अनुभव किया और इस समय अवधी को 'Baby boom' के नाम भी जाना जाता है जिसके कारण इसे समय अत्याधिक जनसंख्या वृद्धि देखी गई

परन्तु ये देश उस समय जनसंख्या वृद्धि की तीसरी या चौथी अवस्था मे थी।

→ यह सिद्धांत मानवीय तथा पर्यावरणीय या प्राकृतिक आपदाओं का अनुमान नही लगा सकता जिसके वजह से किसी देश को पुनः पिछे की अवस्था में भी आना पड़ सकता है जापान के लिए world war II के समय और उसके बाद के दशकों मे यह बात लागू होती है जब नाभिकीय हथियारो के फलस्वरूप तीन दशक तक मृत्यु दर उच्च रही है।

→ यह सिद्धांत चार ही अवस्थायो की बात करता है और इसके अनुसार चतुर्थ अवस्था मे जब जनसंख्या वृद्धि स्थायित्व प्राप्त हो जायेगा तब संक्रमण समाप्त हो जायेगा परन्तु वर्तमान समय मे यह व्यवहारत सही नही है और कुछ जनसांख्यिकताओं (demographer) के अनुसार संक्रमण की V और VI अवस्थाये भी है। Vवी अवस्था :

→ इस अवस्था में वृद्ध लोगो की संख्या ज्यादा होने से मृत्यु दर उच्च हो रही होती है जबकि जन्म दर निम्न स्तर पर रहती है जिसके कारण जनसंख्या मे कमी देखी जाती है और इस अवस्थाओ को चतुर्थ अवस्था से भिन्न माना जाता है।

VIवी अवस्था :

→ इस अवस्था में देश जनसंख्या वृद्धि की आक्रामक नीतियाँ अपनायेगे और प्रजननता

GENERAL STUDIES HINDI

(नोटेस्टीन)

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

को बढ़ावा देगी जिससे जनसंख्या वृद्धि पुनः चालू होगी।

→ यह सिद्धांत प्रवास से होने वाली जनसंख्या वृद्धि को संज्ञान मे नही लेता है जो जनांकिकी की अवस्था को प्रभावित कर सकता है उदाहरण के तौर पर भारत मे शहरो की 1/3 जनसंख्या प्रवास की वजह से बढ़ी है।

जनांकिकीय संचरन मॉडल व ज़ेलिंस्की मॉडल

→ डब्ल्यू ज़ेलिंस्की के अनुसार जनांकिकी संक्रमण और उसके संचरन मॉडल मे जिसको Mobility transition Model भी कहते है मे काफी समानता है वास्तव मे प्रवास का निर्णय या व्यवहार तथा जनांकिकीय परिवर्तन दोनो ही औद्योगिकीकरण, नागरिकरण और प्रौद्योगिकी मे होने वाले परिवर्तन से प्रभावित होते है उसके अनुसार संरचना की निम्न 5 अवस्थाये होती है।

W. ज़ेलिंस्की ने जनांकिकीय संचरन मॉडल दिया।

(I) प्रथम अवस्था — इस अवस्था मे अंतर्राष्ट्रीय प्रवास उच्च होता है तथा अन्य प्रवास नगण्य होते है। (नगण्य)

(II) द्वितीय अवस्था — जनांकिकी ~~संक्रमण~~ की द्वितीय अवस्था मे जनसंख्या अधिक होने से क्षेत्र विशेष पर जनसंख्या दबाव बढ़ जाता है

तथा लोग/संसाधनो की खोज मे बहिवर्ती नवीन क्षेत्रो मे प्रवास करते है। यह प्रवास बसे हुये क्षेत्रो से नये सीमांत क्षेत्रो के लिए होता है और उसमे लोग गॉव से शहरो या बड़े शहरो की तरफ प्रवास करते है।

(3) तृतीय अवस्था - संक्रमण की इस अवस्था मे कृषि पर जनसंख्या दवाब अधिक होने से तथा सीमांत क्षेत्रो की कृषि भूमि विकसित होने तथा उसके परिणाम स्वरूप उन क्षेत्रो मे कृषि विकास अवरुद्ध होने पर लोग द्वितीयक तथा तृतीयक व्यवसायो मे रोजगार पाने के लिए गॉवो से शहर की तरफ प्रवास करते है इसके साथ ही इसमे अंतरनागरिय प्रवास भी उच्च होता है।

(4) चतुर्थ अवस्था - इस अवस्था मे अंतनागरिय व अंतर नागरिय प्रवास उच्चतम होगा।

(5) पंचम अवस्था - विश्व के किसी भी देश मे यह अवस्था अभी नही आई है इस अवस्था मे नगर से नगर प्रवास तथा इसकी गतिशीलता अपने उच्चतम स्तर पर होगी तथा अन्य तरह के प्रवास गौण होंगे

GENERAL STUDIES HINDI

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

अनुकूलतम अतिरेक अल्प
OPTIMUM OVER UNDER

अतिरेक- जनसंख्या

→ इस विचारधारा का मूल माल्थस के मानव खाद्यान (Man food) संबंधों मे, जिसमे माल्थस पृथ्वी की वहन क्षमता की तरफ ध्यान आकर्षित करता है यह सिद्धांत माल्थस से प्रेरणा लेते हुए संसाधनो की उपलब्धता और उसके उपयोग मे संबंध स्थापित करता है।

→ इस सिद्धांत की महत्ता और संदर्भ मानव समाज जिन चुनौतियों का सामना कर रहा है। जैसे - गरीबी, पानी की कमी, ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, असमानता और अन्य समस्याएँ जो मानव के जिवन स्तर को हासिये पर ला रही है उन सिद्धांतो की तरफ ध्यान आकर्षित करता है।

→ यह सिद्धांत पृथ्वी की carrying capacity (वहन क्षमता) को बताता है परन्तु वास्तविकता में पृथ्वी कितने भोगो को वहन कर पायेगी यह विवाद का विषय है। यह क्षमता संसाधनों की उपलब्धी के साथ - साथ प्रौद्योगिकी और तकनीक के विकास पर भी निर्भर है। और इसी संदर्भ मे अनुकूलतम अतिरेक अल्प जनसंख्या की विचारधाराएँ है और ये सिद्धांत केवल संसाधन उपलब्धता पर नही अपितु समाज ~~को~~ इन संसाधनो की

→ यह सिद्धांत पृथ्वी की carrying capacity को बताता है।

GENERAL STUDIES HINDI

उपयोग की क्षमता है कि नही है इस पर भी निर्भर करता है।

अनुकूलतम जनसंख्या एवं गतिशील विचारधारा है :

→ अनुकूलतम जनसंख्या कोई एक निश्चित संख्या नही है और यह अर्थव्यवस्था के प्रकार और उसमे उपयोग मे लाई जाने वाली तकनीक पर भी निर्भर करती है. कोई क्षेत्र कितनी जनसंख्या को सहारा दे सकता है यह वर्तमान मे उपलब्ध संसाधनो पर ही नही बल्कि संसाधनो के उपयोग और उसकी दोहन क्षमता पर भी निर्भर करता है। कुछ का मत है कि हमारा ग्रह (पृथ्वी) 10 - 15 बिलियन लोगो को सहारा कर सकता है और इसमे किसी भी तरह की विपरित परिस्थितियाँ उत्पन्न नही हो और इस संख्या को हम 'K' मूल्य के नाम से समझते है। ['K' मूल्य पृथ्वी को अत्यधिक वहनतम जब तक कोई गंभीर चिंता (serious concern) न हो] परन्तु 'K' मूल्य एक अनुकूल संख्या नही हो सकती क्योंकि अनुकूल जनसंख्या को जीवन प्रहार की सीमांत अवस्था मे विश्लेषण नही किया जा सकता अनुकूल जनसंख्या वो है जब वृद्धि और विकास को वस्तुनिष्ठ ढंग से प्राप्त करने के लिए संसाधनो का प्रेष्ट

→ कुछ का मानना है कि हमारा पृथ्वी 10-15 बिलियन लोगो का सहन समता है। इस जनसंख्या 'K' मूल्य के नाम से जानते है।

उपयोग हो सके।

→ प्रौद्योगिकी ने मानव विकास के संदर्भ में जनसंख्या को भी एक संसाधन माना है और इसे अनुकूलतम जनसंख्या के विश्लेषण के लिए शामिल किया है इस जनसंख्या के कौशल विकास से किसी अल्प या अतिरेक जनसंख्या क्षेत्र को अनुकूलतम जनसंख्या क्षेत्र में तब्दील किया जा सकता है।

→ इस विश्लेषण का तार्किक तौर पर एकरमैन (Eckerman) ने जनसंख्या अनुपात तथा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी के आधार पर वास्तविक तौर पर विश्लेषण किया है और विश्व को 5 (पाँच) वृहद प्रदेशों में बाँटा है।

(1) संयुक्त राज्य अमेरिका — यह प्रदेश जनसंख्या और संसाधनों के संबंध से सर्वाधिक विकसित प्रदेश है और सर्वोत्तम स्थिति में है और इसका जनसंख्या आकार विकसित संसाधनों की तुलना कम है। और इस क्षेत्र में संभाव्य (prospective) और ज्ञात दोनों प्रकार की संसाधनों की प्रचुर मात्रा विद्यमान है यहाँ प्रति व्यक्ति आय तथा मानव स्तर अति उच्च है तथा निकट भविष्य में भी इन क्षेत्रों को अत्यधिक जनसंख्या का कोई डर मौजूद नहीं है। उदाहरणस्वरूप - कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, मध्य एशिया

(2) यूरोप तुल्य - ये प्रदेश प्रौद्योगिकी विकास की दृष्टि से उन्नत है।

GENERAL STUDIES HINDI

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

→ उपलब्ध संसाधनो का लगभग पूर्ण दोहन हो चुका है।

→ जनसंख्या संसाधनो का अनुपात उच्च है तथा जीवन स्तर को उच्च बनाये रखना एक चुनौति बन चुका है।

→ प्रति व्यक्ति आय उच्च है परन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका तुल्य प्रदेशो से कम है।

→ अनुकूलता की सीमांत स्थिति पर है और कोई भी वर्तमान तकनीकी विकास नही है जो भविष्य मे इन प्रदेशो की वहन क्षमता को बढ़ा सके।

(iii) ब्राजील तुल्य प्रदेश - ये प्रदेश प्रौद्योगिकी विकास की दृष्टि से पिछड़े प्रदेश है।

→ जनसंख्या संसाधन अनुपात निम्न है।

→ संभाव्य संसाधनो की प्रचुरता है। किन्तु विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक कारणो से अल्प विकसित है।

→ यह प्रदेश प्रयुक्त तकनीक और संसाधनो के उपयोग की क्षमता के अनुसार कुछ और लोगो को समाहित कर सकते है परन्तु ज्यादा जनसंख्या को नही।

→ यदि तकनीक और प्रौद्योगिकी का विकास किया जाय तो यह U.S.A तुल्य प्रदेशो मे परिवर्तित हो सकते है। जैसे - लैटिन अमेरिका, द० पूर्वी एशिया और उष्ण कटिबंधीय अफ्रीका।

GENERAL STUDIES HINDI

(iv) मिस्त्र या चीन तुल्य प्रदेश – संसाधनो की तुलना मे जनसंख्या अधिक ~~मूल्य~~ है।

→ संसाधन जनसंख्या अनुपात उच्च है किन्तु प्रौद्योगिकी अभी अल्प विकसित या पिछड़ी अवस्था मे है अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है और अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्यो मे संलग्न है।

→ प्रति व्यक्ति आय अल्प है जीवन स्तर निम्न है और जीवन पद्धति मे रुढ़िवादी विचार धारायें देखी जा सकती है।

→ ये क्षेत्र अतिरेक जनसंख्या वाले क्षेत्र है और तकनीक के उपयोग से जनसंख्या संसाधन अनुपात कम ही बढ़ाया जा सकता है और अधिकतम ये धूटोपतुल्य बन सकते है। उदाहरणस्वरूप – चीन, मिस्त्र, भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ~~इटली~~, युआन, युगोस्लाविया, अल्जीरिया, मोरक्को, ट्यूनेशिया

(v) अंटार्कटिक तुल्य प्रदेश। – शीत मरुस्थल और उष्ण मरुस्थल इसके उदाहरण है।

→ ये निर्जन क्षेत्र है।

→ वनस्पति विहिन क्षेत्र है।

→

(0) इष्टतम (OPTIMUM) जनसंख्या पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए [12 Mark)

(0) अनुकूलतम जनसंख्या की संकल्पना पर

GENERAL STUDIES HINDI

संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए [20 M. 2001]

(a)

POPULATION PROBLEM
जनसंख्या समस्याएँ

- **Social**
  - → बच्चा
  - → महिला
  - → वृद्ध
  - → SC
  - → Minority
  - (quality of life)
- **Political**
  - → शरणार्थी
  - → अधिकार
  - → war
  - → असुरक्षा
- **Demography**
  - → जन्म दर
  - → मृत्यु दर
  - → IMR
  - → MMR
  - → जीवन प्रत्याशा
  - → शहरीकरण
  - → निर्भरता
  - → बेरोजगारी
  - → प्रवास
  - → शिक्षा
  - → जनसंख्या वृद्धि
- **Economic**
  - बेरोजगारी
  - ↓ गरीबी
    - सापेक्ष (Relative)
    - निरपेक्ष (Absolute)
  - → खाद्य सुरक्षा
  - → ऊर्जा सुरक्षा
- **Environment**
  - → Developed
  - → developing
  - → climate refugee

→ 2011 में जनसंख्या के लिए योजना पढ़ना है वह net पर hindi pdf उपलब्ध है।

→ जनसंख्या से संबंधित समस्याएँ विकास के कुछ प्रमुख चिंतायें है जिसमे विश्व मे आर्थिक वृद्धि तो गतिशील है परन्तु यह वृद्धि असमान्य है चयनात्मक है कुछ लोगो के लिए बहिष्कारी है और मानव के लिए अन्य समस्याओ को आमंत्रित कर रही है वर्तमान की सभी प्रमुख समस्याएँ अथवा चिंतायें जैसे गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, बेरोजगारी, संघर्ष, लैंगिक असमानता और इनके कारण उत्पन्न भू-राजनैतिक (Geo political) और वैश्विक

holistic - व्यापक

U.P.S.C.

प्रश्न संख्या (Question No.)

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

अर्थव्यवस्था की नई व्यवस्थायें प्रत्यक्षत मानवीय आयामों से संबंधित हैं।

→ ज्यादा तर समस्याएँ अंतरसंबंधित (interrelated) हैं और इन समस्याओं के समाधान तथा प्रबंधन के लिए जो नीतियाँ या हस्तक्षेप क्रियान्वयन मे लाया जाय उसे इन समस्याओं मे जो अंतरसंबंध है उसको ध्यान मे रखते हुए समाधान निदान किया जाना चाहिए।

→ मानव की जो आधारभूत और पुरातन जो समस्या है वह है गरीबी, और इसको निम्न तथ्यों से उजागर किया जा सकता है।

(I) विश्व के करीब 10.7 % (767 million) 2 $ से भी कम मे अपना गुजारा करती है। (प्रतिदिन)

II. विश्व के 50% अतिगरीब (Extreme poor) उप सहारा (साहेल क्षेत्र) मे रहते है।

III. विश्व के ज्यादातर गरीब ग्रामीण क्षेत्रों मे हैं जहाँ रोजगार के साधन उपलब्ध नही है और कृषि अर्थव्यवस्था भी हासिये पर जा रही है।

IV. विश्व के 40% गरीबों के पास विश्व की करीब 5 % संपदा है जबकि विश्व के 20% उच्चतम अमीरों के पास विश्व की 25 % सम्पदा है।

→ विश्व मे करीब unicef (यूनीसेफ) के पास प्रतिदिन 22000 बच्चे गरीबी के वजह से मरते हैं और विकासशील देशों मे इस गरीबी के वजह से जो कुपोषण की समस्या पैदा होती है उसके

GENERAL STUDIES HINDI

कारण 25-30% बच्चे · under weight हैं। और ये ज्यादातर बच्चे दक्षिणी एशिया और उपसहारा क्षेत्र मे हैं।

→ विश्व मे करीब 40 Million लोग H.I.V की बीमारी से ग्रसित हैं और 350-500 Million लोगो को मलेरिया की बीमारी होती है जिससे करीब 1 Million लोग मर जाते हैं।

→ विश्व मे करीब 1.1 Billion लोगो को पर्याप्त पानी उपलब्ध नही है और हर 3 मे से 2 लोगो को स्वच्छ पानी उपलब्ध नही है।

→ गरीबी की समस्या मानव के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। और यह गरीबो मे भी अत्यधिक गरीब को ज्यादा प्रभावित करता है। और उसमे भी महिलायें, बच्चे, बूढ़े और 'Differently abled' (दिव्यांग) लोग ज्यादा प्रभावित होते हैं।

विकलांग शब्द U.P.S.C मे नही इस्तेमाल करना चाहिए।

GENERAL STUDIES HINDI

गरीबी और महिला

1994 - Right to our human

IPCD

U.P.S.C 2011 G.S

→ महिलाओ और बच्चो की समस्याएँ आपस मे अंतरसंबंध है और अब और भी विकराल समस्या बनती जा रही है जब गरीबी का महिला करण हो रहा है इस महिला वर्ग को गरीबी की सबसे ज्यादा मार झेलनी

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

पड़ती है और यह न केवल आय में कमी के वजह से बल्कि समाज और सरकार दोनों में व्याप्त पूर्वाग्रहों का परिणाम भी हैं।

→ महिलाओं की गरीबी और समाज मे व्याप्त लैंगिक असमानता के कारण निम्न स्थिति, प्रजननता की समस्या, शिशु मृत्यु दर और मातृत्व मृत्यु दर की समस्या, अशिक्षा तथा मानव विकास की अन्य समस्याएँ ~~, महिला~~ ~~अशक्तीकरण~~ निहित है।

→ विश्व मे प्रतिदिन 800 महिलाये ~~गर्भधारण~~ गर्भधारण की वजह से मरती है।

→ विश्व की करीब 1/3 महिलायें घरेलु हिंसा का अनुभव करती है।

→ पानी और स्वच्छता की वजह से महिलाये सबसे ज्यादा प्रभावित होती है।

सापेक्षिक गरीबी
RELATIVE POVERTY

→ Globalization से समावेशी को विकास नही करता है अपितु किसी विशिष्ट वर्ग को ही विकास के लिए प्रोत्साहित करता है।

→ वर्तमान विश्व की बहुत से समस्याएँ जैसे - युद्ध, संघर्ष (Conflict) और इनका चरम आतंकवाद जो विकास और वृद्धि का मॉडल हम अपना रहा है जिससे कुछ जनसंख्या को जान बुझ कर बहिष्कृत किया जा रहा है जिससे सापेक्षिक गरीबी हो रही है उनका परिणाम है विकास का जो यह मॉडल है वह भूमण्डलीकरण पर आधारित है जिसमे अकुशल और अर्द्धकुशल श्रमिक इसमे समावेशित नही होते है ग्रामीण जनता को लाभ नही मिलता है तथा विश्व की करीब 70% जनसंख्या जो अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया मे है वो इससे बहिष्कृत है।

→ अतएव हमे भूमण्डलीकरण को नये सिरे से परिभाषित और इसका पुनःविचार करना होगा तथा इसको 'मानवीय ~~चेहरा~~ चेहरा' प्रदान करना होगा जो पूँजीवादीयो और कॉरपोरेट के प्रभावो से मुक्त हो।

→ सापेक्षिक गरीबी को निम्न तथ्यो से इजागर किया जा सकता है।

GENERAL STUDIES HINDI

→ U.N के एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 10 अमीरतम व्यक्तियो की संपत्ति विश्व के 5 सबसे गरीब देशो की G.D.P से अधिक है।

HGO
↑
→ Amnesty
→ Human Right. Watch

→ "An economy for 99%" [OXFAM की रिपोर्ट] के अनुसार विश्व के 8 अमीरतम व्यक्तियों के पास विश्व के 3.6 बिलियन गरीब व्यक्तियो के समकक्ष संपत्ति है।

जनसांख्यिकी गुण से संबंधित समस्याएँ

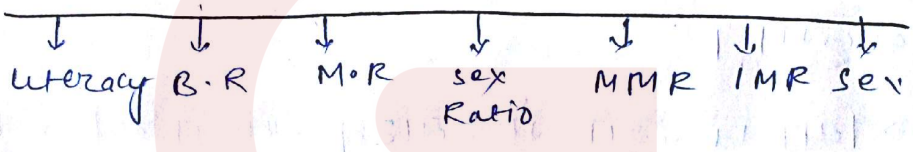

→ जनसंख्या वृद्धि दर वर्तमान मे 1.01% प्रति वर्ष है जो 10 सालो मे 0.14% कम हुई है परन्तु फिर भी हर साल 83 million लोगो की वृद्धि हो रही है जिससे करीब 13 सालो मे 1 बिलियन लोग बढ़ेंगे और इसमे विश्व के 51 जो विकसित देश हैं उसमे 2017-50 मे मध्य जनसंख्या मे ह्रास होगा परन्तु 47 LDC (अल्प विकसित देशों) मे वृद्धि दर उच्च होगी और विश्व की करीब 50% जनसंख्या वृद्धि केवल 9 देशो से होगी।

→ विश्व मे लैंगिक अनुपात कम हो रहा है और यह लैंगिक असमानता को दर्शाता है

→ 2015 मे MMR 174/Lac थी

GENERAL STUDIES HINDI

→ विश्व में करीब 6 मिलियन लोग वृद्ध हैं और 2050 तक यह संख्या 2 Billion हो जायेगी

→ विकसित देशों में जनसंख्या की समस्या

- → वे वृद्ध लोगों की जनसंख्या में वृद्धि
- → संसाधनों की कमी

→ विकसित देशों में जन्म दर कम होने से वृद्धि दर कम होगी जिससे कार्यशील व्यक्ति का अभाव होगा और इससे निर्भरता बढ़ेगा।

→ विकसित देशों में स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा तथा जीवन स्तर उच्च होने से वृद्धों की संख्या बढ़ेगी।

→ जीवन स्तर उच्च होने के वजह से इन्होंने संक्रमण बीमारीयों पर तो नियंत्रण कर लिया है परन्तु इनकी जनसंख्या असंक्रमण बीमारी की चपेट में आ रही है।

GENERAL STUDIES HINDI

→ प्रदूषण की समस्या
→ असमानता (आपेक्ष गरीबी)
→ शहरों से अपराध की प्रवृत्ति
→ व्यक्तियों में अकेलापन और मानसिक बिमारी की समस्या
→ सामाजिक पूँजी का अभाव (No social capital)

प्रश्न संख्या (Question No.)

U.P.S.C.

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

सामाजिक कल्याण एवं जीवन गुणवत्ता

1970-80 में सा० कल्याण आया।
1. तुम क्या बनना चाहते हो
कैसे बनोगे
वर्तमान क्या है करना)

→ यह वह सिद्धांत है जिसके तहत व्यक्ति अपने आप को समाज से संबंधित और समाज में सामावेशी महसूस करता है यह जुड़ाव सामाजिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है इसी के साथ व्यक्तिगत जीवन शैली, एक साथ रहने के तरीके, मूल्य प्रणाली, परम्पराएँ और विश्वास हमारे सामाजिक कल्याण तथा जीवन गुणवत्ता के लिए आवश्यक है।

→ यह सिद्धांत मानव विकास का बड़ा आयाम है तथा समाज के व्यापक विकास को बड़े तौर पर capature (संग्रह) करता है यह केवल व्यक्ति के मानसिक कल्याण को ही नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक संवेगात्मक, आध्यात्म तथा स्वास्थ्य को भी संज्ञान में लेता है तथा इसके साथ भी इसमें -

1. व्यक्ति विशेष की समाज को योगदान की क्षमता।
2. भावी विकास की संभावयता को भी इसमें शामिल किया जाता है।

सामाजिक कल्याण में निम्न 5 आयामों को शामिल किया जाता है।

1. Social Integration (सामाजिक एकीकरण)
2. सामाजिक स्वीकृति

III. सामाजिक निर्माण (social creation)
IV. सामाजिक भागीदारी (Social Responce)
V. सामाजिक चिंता (Social concearn)

सामाजिक कल्याण तथा जीवन गुणवत्ता को हम निम्न तीन से भी स्पष्ट कर सकते है।
I. Domain of being (क्या हो)
II. Domain of belonging (संबंध)
III. Domain of becoming (क्या होना है)
इसे 3B के रूप मे बोल सकते है।

→ सामाजिक कल्याण का प्रथम प्रयास खुशहाली सुचकांक (happieness index) के रूप मे किया गया है जिसको निर्माण (creation), रहने (living) तथा विरासत छोड़ने के अहसास के रूप मे परिभाषित किया गया और खुशहाली को सबसे पहले frankle ने "Man Search for meaning" पुस्तक मे परिभाषित किया है।

→ खुशहाली को वर्तमान मे संतुष्टी के रूप मे परिभाषित किया जाता है और इसकी आकांक्षा को चाहत (मानव विकास के लिए अतिआवश्यक है। डेनमार्क, कनाडा, इत्यादि देशो ने जीवन गुणवत्ता को व्यापक तौर पर प्रमाणित करने तथा इसको capature करने के लिए सूचकांक या आयाम विकसित किये है। इसी मे वैंकयूर शहर मे निम्न तथ्यो का सहारा लिया है।-
→ समुदाय की वहनता (afforditity of commu

GENERAL STUDIES HINDI

→ रोजगार की गुणवत्ता (quality of empel.

→ स्वास्थ्य

→ आवास की गुणवत्ता

→ सामाजिक संरचना – जैसे भारत में पितृ सतात्मक है

→ दबाव का पैमाना (Stress)

→ बचाव और सुरक्षा का पैमाना (Safety & Security Measure)

(Q) सामाजिक कल्याण पर टिप्पणी कीजिए (Social willbeing) [15 M]

सामाजिक पूँजीवाद / SOCIAL CAPITAL

FPO – Farmer programme organisation

→ सामाजिक पूँजी को सबसे पहले फ्रांस के सांस्कृतिक थ्योरिस्ट पियरे बॉर्दियु द्वारा सुझाया गया था जब वो फ्रांस में 'Dominance & Sub ordination' का अध्ययन कर रहे थे और आधुनिक युग में इस सिद्धांत को अमेरिकन सामाजिक चिंकर राबर्ट पुटमैन ने प्रतिपादित किया जब वो समाज में Hierarchy कैसे विकसित होती है और कैसे यह U.S.A में कुछ समूहों को औपनिवेशीकरण करता है। इसका उल्लेख उन्होंने अपनी पुस्तक 'Making democracy work' में किया है।

परिभाषा – सामाजिक पूँजी का संदर्भ व्यक्तियों के संबंधों से है जो सामाजिक नेटवर्क और परस्परिता व भरोसों के मानदण्डों से उत्पन्न होता है इस दृष्टि से मानव पूँजी का संदर्भ Civic (सतगुणों) values से है सामाजिक पूँजी इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करती है कि परस्परिक संबंधों को एक नेटवर्क मे पिरोये जाने पर सतगुण (C.V) अधिक सशक्त होते हैं। अनेक गुणों से संपन्न परन्तु व्यक्ति से अलग थलग समाज भी अनिवार्यत रूप से सामाजिक पूँजी से समृद्ध नही होती है – राबर्ट पुटमैन

[डेटोन - U.S.A काला समूह रहते हैं]

→ विश्व बैंक के अनुसार सामाजिक परम्पराओं का जोड़ (मात्र) नही है परन्तु यह वह (सरेस) गोंद है जो उन्हे इकट्ठा करता है।

सामाजिक पूँजी का महत्व :

→ सामाजिक पूँजी का सिद्धांत उन संस्थानों, संबंधो, प्रतिमानों का उल्लेख करता है जो किसी समाज की अंतः क्रिया की गुणवत्ता व मात्रा का निर्माण करते हैं। इसमे विश्वास, आपसी समझ और साझे मूल्य तथा व्यवहार शामिल है जो किसी समुदाय के सदस्यों को आपस मे जोड़ते और सहकारी कार्य को बनाते हैं।

GENERAL STUDIES HINDI

→ बुनियादी आमुख्त यह है कि ऐसी परस्परिक लोगो को समुदायों का निर्माण करने उन्हे एक दूसरे के साथ प्रतिबद्ध करने और सामाजिक ताने बाने को बुनने मे सामर्थ्य बनाती है।

→ एक दूसरे से संबंधित होने की होने संभावना और सामाजिक नेटवर्किंग का ठोस अनुभव और उससे उत्पन्न होने वाला विश्वास और सहिष्णुता का संबंध लोगो को बहुत बड़ा लाभ पहुँचा सकता है।

→ आर्थिक नीतियों की विफलता का तर्कपूर्ण स्पष्टीकरण ही सामाजिक पूँजी के द्वारा समझाया जा सकता है।

→ सामाजिक पूँजी की संवृद्धि से स्वास्थ नागरिक समाज का निर्माण संभव है।

→ अंतर्राष्ट्रीय संबंध Track II diplomacy, confidence building measure, cricket diplomacy इत्यादि को (cultural diplomacy) सामाजिक पूँजी के द्वारा समझा जा सकता है।

→ सैद्धांतिक तौर सामाजिक पूँजी तथा संस्थान चार निर्णायक भूमिका निभा सकते है।

1. सेवा भूमिका - लोगो को किसी सार्वजनिक समस्या से प्राथमिक स्तर पर निपटने के लिए प्रोत्साहित करती है।

II. मूल्य संरक्षक भूमिका (value gurdian) - इसके द्वारा समाज मे बहुलवाद, विविधता

GENERAL STUDIES HINDI

U.P.S.C.

प्रश्न संख्या (Question No.)

इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)

और स्वतंत्रता की संवृद्धि तथा उन मूल्यों का संरक्षण संभव होता है।

(iii) सामाजिक सुरक्षा तथा समर्थन –

(iv) समुदाय निर्माण भूमिका –

II ARC का 9 Report

Chapter-1

-Gos

Self help Group

Chapter-10

Coperative Group } syllabus

Report -10

Report -4

IInd ARC की 9 Report

GENERAL STUDIES HINDI